PUNJAB APPROPRIATION (NO. 2) BILL, 1989—*Contd.*

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): Hon. Members, time allotted to it is three hours. Already one hour was spent yesterday and, I think, today also. So, I would request Members to be as brief as possible. Shri Ahluwalia to continue.

**श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया :** उपसभाध्यक्ष जी, मैं पंजाब विनियोग (सं० 2) विधेयक, 1989 पर बोल रहा था। उसी के संदर्भ में, जैसा कि मैंने लंच के पहले कहा कि आज पंजाब की अवस्था के पीछे गैर-जिम्मेदार विपक्ष भी उतना ही जिम्मेदार है, जितना कि बार्डर के उस पार बैठे लोग हमारे नौजवानों को भड़का रहे हैं।

जब बात आती है कि आतंकवाद से कैसे लड़ा जाए; तो आतंकवाद से कोई डाइरैक्ट लड़ाई नहीं है कि फौज उधर खड़ी है, इधर भी फौज खड़ी है हमारे पुलिस वाले गोलियां चलायेंगे और उससे विरोध हो सकेगा। समाज में भी सुधार लाने की जरूरत है।

जिसके कारण एक आदमी आतंकवाद के रास्ते पर जाता है, उन चीजों को भी विचारने की जरूरत है। बाहरी मुल्कों ने हमारे मुल्क को कमजोर करने के लिए हमारे बीच दरार डालने के लिए पंजाब में बहुत बड़ी कोशिश की और उसमें कम्यूनल रायट कराने की कोशिश की गई, कम्यूनल लाइन पर डिवीजन कराने की कोशिश की गई। किंतु दुख उस वक्त होता है जब एक जिम्मेदार पार्टी, बी.जे.पी. जैसी पार्टी शिव सेना बनाने लगती है, जब एक जिम्मेदार पार्टी अकाली दल जैसी पार्टी खालिस्तानी कमांडोज़ को सपोर्ट करने लगती है और जब फिर बी.जे.पी. पार्टी बजरंग ब्रिगेड को खड़ा करती है और अकाली दल भिंडरावाला टाइगर फोर्स का समर्थन करता है। और हिन्दू और सिख के बीच में दीवार खींचने की कोशिश की जाती है। उपसभाध्यक्ष महोदय, यह बड़े दुख की बात है और जब भी हम पंजाब पर चर्चा करते हैं तो बड़े-बड़े सुझाव आते हैं कि ऐसा करना चाहिए। अभी कुछ देर पहले, हमारे विपक्ष के नेता कह रहे थे कि लौंगोवाल एकार्ड इम्प्लीमेंट करना चाहिए पर वह एक ऐसे सेन्टर, ऐसे कोलीशन में जुड़े हुए हैं वह विपक्ष के सदस्य जहां पर मैं कहूं कि आज आश्चर्य होता है जब कास्टिस्ट्स, कम्युनलिस्ट्स और कम्युनिस्ट्स तीनों एक प्लेटफार्म पर खड़े हो गए। विरोध किसका है, विरोध राजीव गांधी का करना है। विरोध किसका है, विरोध सैकुलर थिंकिंग का है। सैकुलरिज्म के खिलाफ लड़ाई लड़नी है और जनसाधारण के लिए, जनता के लिए कुछ नहीं करना है। उपसभाध्यक्ष महोदय, दुख उस वक्त होता है जब इस तरह से समाज को बांटने की कोशिश चलती है और एक तरफ से मैं कम्युनिस्टों की सराहना करता हूं कि उन्होंने पंजाब पर भी कोई कोशिश की है तो कम्यूनल लाईन पर डिवीजन लाने की कोशिश नहीं की और उन्होंने जब भी पंजाब के बारे में सोचा है तो नेशनलिस्ट थिंकिंग लेकर सोचा है। पर दुख उस वक्त होता है पंजाब के बारे में उनकी विचारधारा दूसरी है, पर दिल्ली में आकर उनकी विचारधारा दूसरी हो जाती है। इन चीजों पर विचार करने की जरूरत है। जो पोलिटीकल लीडर्ज हैं या पोलिटीकल पार्टियां हैं उनका भी कोई कोड आफ कंडक्ट हो। पंजाब के बारे में वह जगह-जगह अलग-अलग अपनी प्रैस रिलीज़ देते है और अलग-अलग बातें कहते है। उपसभाध्यक्ष महोदय विपक्ष के नेता कहते हैं कि पोलिटीकल सोल्यूशन करो, मैं कहता हूं कि पोलिटीकल प्राब्लम है या नहीं। पंजाब में पोलिटीकल प्राब्लम नाम की कोई चीज नहीं है। यह तो एक हौआ खड़ा किया गया है। वहां अगर कोई प्राब्लम है तो इकोनोमिकल प्राब्लम है। वहां अगर कोई प्राब्लम है

[श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया]

तो एम्प्लायमेंट प्राब्लम है। वहां अगर कोई प्राब्लम है तो डिवैलपमेंटल प्राब्लम है कि वह जहां तक डिवलपमेंट हो सकती थी पंजाब में, एक मेहनतकश पंजाबी जहां तक मेहनत कर सकता था, पंजाब सिर्फ सिखों का नहीं है, पंजाबियों का है और पंजाब का पंजाबी जहां तक मेहनत करके एक चीज को पहुंचा सकता था, हरित क्रांति की बात कहिए, आज भारतवर्ष को सब से ज्यादा अन्न पंजाब देता है। अगर हम कहें कि उसका अनुदान सिर्फ सिखों का है तो वह गलत होगा। मैं बिहार से आता हूं और बिहार को सारी पंजाब के खेतों में काम करने वाली लेबर बिहार से जाती है और अगर ऐसी कोई शिकायत हो कम्यूनल डिवीजन की, अगर ऐसी कोई शिकायत हो कि वहां पर हिन्दू को नहीं देखा जाता है तो यह बिहारी कम से कम हजार किलोमीटर दूर चल कर वहां खेतों में काम करने के लिए नहीं जाते। उप सभाध्यक्ष महोदय, मैं गर्व से कहता हूं कि पंजाब के पंजाबियों ने यह करके दिखाया है कि इतना कुछ होते हुए भी वहां इस बार चावल की प्रोडक्शन हाईएस्ट हुई है। इतना कुछ होते हुए भी वहां दालों की प्रोडक्शन अच्छी हुई है। इतना कुछ होते हुए भी वहां सरसों की प्रोडक्शन और तिलहनों की प्रोडक्शन अच्छी हुई है।

उपसभाध्यक्ष महोदय, प्रधान मंत्री ने फूड प्रोसैसिंग यूनिट लगाने के लिए पेप्सी कोला को परमिशन दी और उसके साथ-साथ वहां का कृषक जो है उसको अपने डोर-स्टैप पर अपना माल बेच सके वह व्यवस्था करने की कोशिश की है। मैं आपके माध्यम से मंत्री महोदय का ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा कि पंजाब दाल सब से ज्यादा पैदा करता है, पर पंजाब का पंजाबी जब दाल बेचता है तो वह 400/- रुपये क्विंटल के हिसाब से बेचता है और जब खरीदने जाता है तो 11/- रुपये के.जी. खरीदता है। यह जो मोडिएटर मिडलमैन को इतना पैसा जाता है इसको रोकने के लिए मेरी आपके माध्यम से सरकार को गुजारिश है कि कम से कम छोटी-छोटी दाल मिलें हर गांव में लगाई जाएं कि जो गांव में दाल उपजाता है वह कम से कम लोकल दाल मिल को बेच सके। तो यह बड़ी दाल मिलों का जो लाभ है, जो मुनाफा है वह कम होगा और सहूलियत के लिए सब को सस्ती दालें मिल सकेंगी। सिर्फ यही नहीं, अगर तेल के बीजों की, तिलहनों की बात करें तो वह भी देखिए कि सरसों के बीज का दाम कितना है और सरसों के तेल का दाम कितना। मेरी आपके माध्यम से गुजारिश है, माइक्रो आयल मिल्ज जहां-जहां, यह सिर्फ पंजाब में नहीं, जहां-जहां कृषि क्षेत्र है वहां पर लगनी चाहिएं और माइक्रो मिल्ज में जो प्राइमरी तेल है वह निकाल कर वह बड़ी मिलों को दिया जाए, जहां पर बड़ी आयल मिल्ज उसको रिफाइन करके पैकिंग कर के बेच सकें। इससे तेल की कीमतों में कमी होगी और काश्तकारों को, किसान को अपने दरवाजे पर दाल और तिलहन बेचने का मौका मिलेगा। पंजाब ने हर चीज में पहल ली है, इसमें भी पहल ले और यह छोटी माइक्रो दाल मिल और माइक्रो आयल मिल की शुरूआत पंजाब से हो और सारे हिंदुस्तान के कृषि क्षेत्र में फैले। ऐसी मैं आशा रखता हूं।

**उपसभाध्यक्ष (श्री जगेश देसाई):** अब आप समाप्त कीजिए।

**श्री चतुरानन मिश्र:** चावल, दाल बेच लिया, अभी नून बेचना है।

**श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया:** अभी तो असली चीज बेचनी है।

महोदय, मेरी आपके माध्यम से गुजारिश है उन फंडामेंटलिज्म दलालों को और उन फंडामेंटलिज्म एडवोकेटस को, जो हिंदुस्तान की धरती पर नहीं

बल्कि विदेशों में जाकर प्रचार कर रहे हैं। पंजाब का मसला पंजाब के लोगों को हल करने दीजिए, पंजाब के मसले पर पंजाब के लोगों को फैसला करने दीजिए, पंजाब का मसला पंजाब के अंदर रहने दीजिए। पंजाब का मसला सात समुंदर पार से जाकर अपना कपड़ा उठाकर नंगा पेट दिखाने की कोशिश न करिए। आज विदेशी ताकतें इस इंतजार में बैठी हुई हैं कि पंजाब के किस हिस्से में आग लग रही है, उसमें कितना तेल डालने से हिंदुस्तान जल सकता है, असम के किस हिस्से में आग लग रही है और वहां कितना तेल डाल देने से हिंदुस्तान जल सकता है। ऐसी कोशिश करने वाले जो लोग बैठे हैं, जो विदेशी ताकतें बैठी हैं, उनको जो खबरें देते हैं, वह खबरें उसी तरह से हैं, जिस तरह से एक घुसपैठिया अपनी डिफेंस की खबरें लोगों को बताता है कि हमारे पास यह अस्त्र-शस्त्र हैं या यह हमारी सुरक्षा है, यहां हमारी असुरक्षा है, यह गेट खुला मिलता है, जो इस तरह के विचार बेचता है उसके खिलाफ जो कड़ी कार्यवाही की जाती है सरकार की तरफ से या मुल्क की तरफ से, वैसी ही कार्यवाहियां इनके खिलाफ भी होनी चाहिए।

महोदय, आज पंजाब के मसले को भड़काने के पहले, जैसा मैं पहले भी बोल चुका हूं और फिर से याद दिलाना चाहता हूं कि पंजाब के मसले को भड़काने से पहले कम से कम पंजाब का दौरा करें, पंजाब के मसले को लेने से पहले कम से कम जनता दल जैसी पार्टी उसका एक नमूना बनाए कि पंजाब के बारे में वह क्या कहना चाहते हैं, आनंदपुर रेजोलूशन के बारे में वह क्या कहना चाहते हैं? चन्द्रशेखर कहें कि मेरे सामने ये आनंदपुर रेजोलूशन पास नहीं हुआ था और अगर पास हुआ था तो मेरी अज्ञानता में पास हुआ था, मुझे मालूम नहीं था। तो मैं कहुंगा कि इन चीजों पर विचार करने की जरूरत है। मैं यह चीजें आपके सामने इसलिए ला रहा हूं क्योंकि मैं देखता हूं पंजाब पर बातें होती हैं तो तरह-तरह के आरोप लगाए जाते हैं, तरह तरह के दोषारोपण सरकार पर होते हैं। लेकिन इन चीजों पर आज गंभीरता से देखने की जरूरत है कि पंजाब में ऐसा क्यों हो रहा है?

उपाध्यक्ष महोदय, मैं अपना वक्तव्य समाप्त करने से पहले एक और चीज कहना चाहता हूं कि पंजाब में अच्छा शासन चलाने के लिए, पंजाब में आतंकवाद को रोकने के लिए हम लोगों ने पुलिस को ताकतें दीं। परन्तु ऐसा नहीं है कि पुलिस एकदम धोई हुई तुलसी की पत्ती है। पुलिस ने कहीं-कहीं ज्यादतियां भी की हैं और उन ज्यादतियों को रोकने की जरूरत है। मैं आपके माध्यम से सरकार से पूछना चाहूंगा कि सरकार ने कितने विजलेन्स सैल बनाए हैं पुलिस की ज्यादतियों को रोकने के लिए, सरकार ने कितने ग्रिवेन्सेस सैल बनाए हैं लोगों की ग्रिवेन्सेस सुनने के लिए और जो ग्रिवेन्सेस की पीटीशन पड़ती है, क्या उनको फिर डराया धमकाया नहीं जाता और अगर ऐसी चर्चा सुनी जा रही है तो क्या उन पर कारगर कदम लिए जा रहे हैं या नहीं? तो मैं कहूंगा कि इस पर विचार करने की बहुत जरूरत है और पुलिस पर भी अंकुश लगाने की जरूरत है। अगर वहां बैठा कोई भी, किसी भी पार्टी का समर्थित पुलिस आफीसर ऐसी चीज करता है तो उससे बदनाम तो केन्द्र सरकार ही होती है, तो उस पर अंकुश लगाने की जरूरत है। हमने पुलिस को जो पावर दी है, वह आतंकवाद को रोकने के लिए दी है, न कि आतंकवाद को बढ़ावा देने के लिए। आतंकवाद को बढ़ाने में जितने जिम्मेदार विपक्ष के लोग हैं, उसके साथ साथ कुछ पुलिस अधिकारी भी हैं, जो आतंकवाद को दिन-पर-दिन बढ़ा रहे हैं, इस पर अंकुश लगाने की जरूरत है। धन्यवाद।

**SHRI B. SATYANARAYAN REDDY (Andhra Pradesh):** Mr. Vice-Chairman, Sir, efore I go into this Appropriation Bill ...*(Interruption)*..

**THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI):** Please try to finish in ten minutes' time.

SHRI B. SATYANARAYAN REDDY: I will finish. I would like to say something about the conditions that are prevailing in Punjab. Sir, it is really a tragedy, a pity that we are discussing this Appropriation Bill on Punjab in this House. In fact, earlier also we have said that the Appropriation Bill should have been discussed in the Legislative Assembly of Punjab, duly elected Assembly of Punjab. But, unfortunately, the elected government of Punjab under the leadership of Surjit Singh Barnala has been dismissed and the Legislative Assembly dissolved. This is most undemocratic and unconstitutional. The Barnala Government has been dismissed on the plea that there was no law and order. I would like to mention here that after the imposition of President's rule, after the dismissal of the Barnala Government, the killings have been increasing in Punjab. The Minister knows very well. Kindly go into the statistics. What is the ratio of killings during the Barnala Government and this Presidential rule? That will clearly show that this Government, that is the Government under President's rule in Punjab, that is the Government which is under the Central control, has utterly failed to maintain law and order and it has failed to protect the lives of innocent people. Recently we have seen how in Moga 24 volunteers of the RSS have been killed mercilessly. There was no protection. That is only an example. Such killings have been taking place every day. Innocent kisans, irrespective of whether they are Sikhs or Hindus, have been killed, murdered. There is no protection. So I would like to ask this Government: What moral right have you got to continue to rule this country? And this Prime Minister who is responsible for the creation of the Presidential rule in Punjab has failed to maintain law and order. So it is our demand that the Prime Minister should resign because he has failed to create confidence in the people's mind. When he has failed in Punjab, the whole country is shaken, people's conscience has been shaken. He cannot remain. How are we going to protect the lives of these innocent people?

Secondly, Sir, I would like to draw the attention of this House and the country to the fact that in spite of this violence, in spite of these killings, the brave people of Punjab, the farmers, the workers, the general public, irrespective of their religion and caste, stood like a rock. They maintained the communal harmony. They maintained the spirit of India to live together. Punjab is a part of India. They stand for the unity and integrity of the country. We condemn violence, all sorts of violence. We stand for the unity of the country. Some of my friends have referred to the Anandpur Sahib resolution. I do not know what it contains. I could not get till date what the true translation of that resolution is because it has been orginally drafted in Punjabi, in Gurmukhi language. I could not get it. It had been referred to the Sarkaria Commission. The Sarkaria Commission has clearly stated that to accept the Anandpur Sahib resolution is suicidal to the country and if we accept it, it will lead to secession. If it is so, we will oppose it, we will not support it. I do not know even till date the true contents. Different versions of it are there. Some say it will lead to secession. Some say what they want is autonomy. They demanded autonomy. If they really demand autonomy or more powers to states, not secession, there is nothing wrong. (*Interruptions*). But if it contains the element of secession, we will completely oppose it. If it contains a demand for autonomy and more powers to states there is nothing wrong. It is time for improving Centre-State relations. The powers of the States should not be curtailed. Only when the States become strong, the Centre remains strong. If the States become weak, the Centre becomes weak. Together we have to strive for the prosperity and unity and integrity of the country. If we want a strong India, we must have strong States...

THE MINISTER OF STATE IN THE DEPARTMENT OF EXPENDITURE IN THE MINISTRY OF FINANCE (SHRI B. K. GADHVI): Just a moment. Mr. Vice-Chairman, much water has flowed down the bridge and I am surprised that a senior Member like Mr. Reddy today says, "We don't understand the contents of that resolution and, therefore, we are not in a position to take a clear stand." If this is your responsibility, then it speaks for itself.

SHRI B. SATYANARAYAN REDDY: Excuse me, I had demanded on the floor of this House so many times, I had requested the Government, to supply me a true copy, an authenticated translation, of that resolution. And we made it very clear...

SHRI V. NARAYANASAMY (Pondicherry): In your State of Andhra Pradesh you have not curbed the Naxalite movement. You have no right to speak about Punjab.

SHRI B. SATYANARAYAN REDDY: I have made my point of view very clear, we have made our party's point of view very clear, that we stand for a united India, we do not want secession of any part of the country, whether of Punjab or of any other part of the country. Why don't you understand that? I give you an example. I was a student in those days. Many of my friends of that time are now in the Congress Party. We were not communists. Our friends were not communists at that time. But many Congressmen used to say, "Oh, he is a communist, he is a communist, they are communists". What happened? They all really became communists. Therefore, the lesson you should learn is, nobody is for Khalistan, no Punjabi says I want Khalistan, no Indian says I want Khalistan, no member of any political party says I want Khalistan. They all want to live united, they all want to live in peace and prosperity in this great country of ours. So, don't repeat this word 'Khalistan' and don't encourage those tendencies. I request my friends to think over this problem coolly. Ours is a great country. We are here representing the great people of this great country. We should not take it lightly. We must discuss the situation very seriously. It is a question of our country's unity and integrity. Due to our mistakes in the past we have divided our country, We have partitioned this great country. We are ashamed of it. But it happened. Let us not make that mistake again. Due to our wrong policies and conceptions we have treated badly a section of our people. So they have gone out. We should not make that mistake again.

Thirdly, I would like to tell my friends, this is not a debate to blame one party or the other. Everybody is patriotic in this country. Don't bring in narrow politics so far as national issues are concerned. Neither Bhartiya Janata Party nor Communist Party nor CPM nor Janata Dal nor Telugu Desam nor DMK, no party nobody, wants any harm to this country. Everybody is a patriot, whether in this party or in that party. We are all patriots. We should know that. We should not go on accusing so-and-so is such-and-such. We are all patriotic. We are not going to deceive our country, we are not going to defame our country in the eyes of the world. Kindly bear that in mind.

Then I would like to say, some friends, especially Mr. Darbara Singh and Mr. Ahluwalia, said:

इन्होंने कहा, हमने कभी पंजाब का दौरा नहीं किया। मैं नम्रतापूर्वक आपसे निवेदन करना चाहता हूं, दरबारा सिंह जी तो नहीं हैं यहां सदन में, लेकिन मैं उनसे कहूंगा कि हमारी पार्टी के नेता और हमारे राज्य के मुख्य मंत्री श्री एन० टी० रामाराव ने हम सब को आदेश दिया कि पंजाब का दौरा करें।

[श्री बी० सत्यनारायण रेड्डी]

मैं खुद गया था पंजाब... (व्यवधान) आप सब्र रखिए, क्यों उतावले होते हैं? मैं आंध्र प्रदेश के छोटे से गांव का रहने वाला हूं, फिर भी मैं एन० टी० रामाराव जी के आदेश से पंजाब गया, मैंने पंजाब का बहुत दौरा किया यहां तक कि भगतसिंह के जन्मस्थान भी गया और वहां भी गया जहां ब्रिटिश सरकार ने उनको फांसी दी, उनका मैमोरियल बना वहां भी गया। पंजाब वह भूमि है कि जहां बहादुर वीर भगतसिंह, लाला लाजपतराय जैसे महापुरुषों ने जन्म लिया। इसके ऊपर भारत को गर्व है। हम यह नहीं चाहते कि पंजाब के लोग उनके बलिदानों को भूल जाएं। हम उनसे इंसपिरेशन लेते थे गदर पार्टी के महान वीर थे जिन्होंने स्वतंत्रता के लिए अपना सर्वस्व त्याग दिया। हम नहीं चाहते कि पंजाब में खूनखराबा हो। लेकिन उसके क्या वजूहात हैं। उसकी गहराई में जाने की जरूरत है।

We have to go deep into the reasons for the troubles in Punjab and we have to solve the problem of Punjab. We cannot sit idle and blame each other. There are certain problems. We have to understand the aspirations of the people of Punjab.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): Only two minutes more Mr. Reddy.

SHRI B. SATYANARAYAN REDDY: I have to mention many things and so, kindly consider. This is a very important issue.

Sir, as I was telling, we have to go deep into the problem. I have attended many meetings there. When Mr. Darbara Singh goes there, he goes with military or police protection. But I do not go with police protection. I have gone round Punjab without police protection and our leader, Shri N. T. Rama Rao, has gone and he has gone to Longowal and addressed a big gathering a big public meeting, there. Similarly, leaders of the CPI, CPI(M), Janata Dal and other political parties have gone there. We have been there. We have studied the situation there and, therefore, I say that we have to go into the details, into the reasons and then see how to bring peace in Punjab. There was an agreement or accord between the Prime Minister, Shri Rajiv Gandhi, and the late Longowal and that accord has not been implemented. It has not been implemented and we want that it should be implemented. There are still some detenus who have not been released. Of course, we were demanding from the beginning that they should be released, that all of them should be released. A majority of them have been released but still some are in detention.

SHRI B. K. GADHVI: Each one of the Jodhpur detenus has been released and if there are some in custody, it is because of other crimes.

SHRI B. SATYANARAYAN REDDY: What about Mr. Badal who is in detention still? There are other Akali leaders who are in detention. Why should they not be released? All of them should be released. You must have talks with them, you must have a dialogue with them, in order to solve the problem of Punjab. But keeping them under detention, by answering with bullets for bullets, you are not going to solve the problem of Punjab. You have to negotiate. Even in Sri Lanka, you have to negotiate.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): Mr. Reddy, you are going from one point to another. There is no time now. Please conclude now.

SHRI B. SATYANARAYAN REDDY: Therefore, the Government must seriously consider this and they must hold immediate consultation with all the political parties and they must hold the Assembly elections and must restore the democratic norms in Punjab.

And they must solve the unemployment problem in Punjab. All the victims of the 1984 riots have to be provided with all facilities. During the riots in Delhi and in the rest of the country all parties were protecting the Sikhs like anything. It is not that we have neglected them. In Andhra Pradesh, in Bengal, in Tamil Nadu and in Kerala, in all these States all the parties protected the Sikhs because they consider them as their own brothers. We did not allow them to be put into trouble. That is what I wanted to make clear.

Now, I will come to the main Bill. There are two or three points so far as the Bill is concerned.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): You are coming to the Bill after 16 minutes are over.

SHRI B. SATYANARAYAN REDDY: Parliament has been asked to sanction or approve the Appropriation Bill, certain amounts for the development and other welfare activities in the Punjab. Of course, this is a truncated Parliament. It has no moral right. Still when we are discussing...

SHRI CHATURANAN MISHRA: No right to discuss it? Right we have. You can say that it is not moral. But don't say that we have no right.

SHRI B. SATYANARAYAN REDDY: What I want to say is that a large number of Lok Sabha Members have resigned. They have no opportunity to discuss.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): This is not Lok Sabha. This is Rajya Sabha.

SHRI B. SATYANARAYAN REDDY: The funds that have been allocated are not sufficient. For Agriculture and Forests the amount of Rs. 99 crores and 11 lakhs is not sufficient. I am giving only an example. Then, for Education, which is very important, the fund allocated is very meagre. Similar is the case with Industries, Labour and Unemployment. As I have stated, unemployment is very serious. The Government has to take into consideration that sufficient funds are provided to root out unemployment. Similarly for Local Government Housing and Urban Development the amount allocated is very meagre. For Revenue and Rehabilitation also the amount is very meagre. It is Rs. 44 crores and it has to be increased. If you really want the development of the people of Punjab, you have to take all these things into consideration. Then, for Social and Women's Welfare— these are all important—the amount allocated is very meagre. I want to draw attention to the fact that simply coming to Parliament and allocating insufficient funds will not solve the problem. Democratic institutions should be restored and elections should be held immediately for the Assembly. Mr. Buta Singh told that elections for the Parliament are possible but not for the Assembly. I cannot understand this. You have got your own intentions. Your intentions are bad. Have Assembly elections. Have popular Government in Punjab. Let the people of Punjab and the Assembly decide their own budget, their own estimates. By sitting here we cannot do any justice to the people of Punjab. It is my humble request. If the wrong policy of the Central Government continues, you are not going to solve the problem of Punjab. You have to change your policy. Otherwise the people of India will throw you out and the problem of Punjab will be solved by the democratic forces of this country. Thank you.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): Dr. Ratnakar Pandey, Only 10 minutes, please.

डा० रत्नाकर पाण्डेय (उत्तर प्रदेश): माननीय उपसभाध्यक्ष जी, आपने मुझे श्री बी० के० गढवी जी द्वारा 31 जुलाई, 1989 को उपस्थित किए गए वित्त वर्ष 1989-90 की सेवाओं के लिए पंजाब राज्य की संचित निधि में से कतिपय राशियों के संदाय और विनियोग को प्राधिकृत करने वाले विधेयक पर, जिस रूप में वह लोक सभा द्वारा पारित किया गया है, आज विचार हेतु इस सदन में

[डा० रत्नाकर पाण्डेय]

प्रस्तुत है उस पर मुझे बोलने के लिए जो मौका दिया है उसके लिए मैं आपके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता हूं । इस पंजाब विनियोग विधेयक के उद्देश्य और कारणों में कहा गया है कि यह विधेयक संविधान के अनुच्छेद 356 के अधीन 11 मई, 1987 को पंजाब राज्य के बारे में जारी की गई उद्घोषणा के साथ पठित संविधान के अनुच्छेद 204(1) के अनुसरण में पुरःस्थापित किया जा रहा है । यह पंजाब राज्य की संचित निधि में से उन धनराशियों के विनियोग का उपबंध करने के लिए है जो वित्तीय वर्ष 1989-90 के लिए पंजाब राज्य की संचित निधि पर भारित व्यय और पंजाब सरकार के व्यय के लिए लोक सभा द्वारा किए गए अनुदानों की पूर्ति करने के लिए आवश्यक है । लगभग 49,52,49,27,000 रुपयों का यह विधेयक जिन मदों पर खर्च किया जा रहा है, मैं समझता हूं कि कोई भी जन प्रतिनिधियों की सरकार होती तो जब भी इसके बाहर खर्च नहीं करती । इसमें कृषि, और वन, पशुपालन और मत्स्य उद्योग, सहकारिता, रक्षा सेवाएं, कल्याण, शिक्षा, निर्वाचन, उत्पाद-शुल्क और कराधान, वित्त, खाद्य और पूर्ति, साधारण प्रशासन, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण, गृह और न्याय, उद्योग, सूचना और जन संपर्क, सिंचाई और विद्युत, श्रम और रोजगार, स्थानीय शासन, आवास और शहरी विकास, कार्मिक और प्रशासनिक सुधार, योजना, कार्यक्रम कार्यान्वयन, लोक निर्माण, राजस्व और पुनर्वास, ग्रामीण विकास और पंचायत, विज्ञान, प्रौद्योगिकी और पर्यावरण, समाज और महिला कल्याण और अनुसूचित जाति तथा पिछड़ा वर्ग कल्याण, राज्य विधान-मंडल, तकनीकी शिक्षा और औद्योगिक प्रशिक्षण, पर्यटन और सांस्कृतिक कार्य, परिवहन और सतर्कता, इन 25 मदों पर जिसमें 30 उप-विभाग हैं, खर्च की जा रही है । यह बहुत बड़ी धनराशि है। अभी मेरे पूर्ववर्ती सदस्य ने कहा कि पंजाब में जो पहले बरनाला की सरकार थी वह बहुत अच्छी चल रही थी । राष्ट्रपति शासन लागू करके हमने बहुत बड़ा अपराध किया । पंजाब पांच नदियों का प्रान्त है--सतलुज, व्यास, रावी, चिनाब, झेलम, सिंधु बहे पंजाब । इन पांच नदियों के प्रदेश में जहां वीर उत्पन्न हुए थे वहां लाला लाजपत राय और भगतसिंह जैसे वीर-बांकुड़े भी उत्पन्न हुए । देश का गौरवशाली यह पंजाब राज्य है जो हमारी सीमाओं की रक्षा के साथ साथ देश भर में सबसे अधिक और अच्छी किस्म की गेहूं की उपज पैदा करता है । लेकिन आज उसी पंजाब की नदियों में जल की जगह बेगुनाहों और मासूम लोगों का खून बह रहा है और धरती लाल हो रही है । नदियों मे पंजाबवासियों का रक्त प्रवाहित हो रहा है । पंजाब का उद्योग तबाह किया जा रहा है । यह सब क्यों किया जा रहा है ? औद्योगिक दृष्टि से, भौतिक दृष्टि से और शारीरिक दृष्टि से जिस तरह का शोषण हो रहा है वह असहनीय है । सारा देश उसके लिए चिन्तित है । जनता द्वारा ठुकराये हुए कुछ राजनितिज्ञ अपनी स्वार्थ की पूर्ति के लिए विदेशी ताकतों के सहारे देश की एकता और अखण्डता को छिन्न-भिन्न करने पर तुले हुए हैं । सबसे बड़ा कारण पंजाब में, मैं मानता हूं कि ऐसे तत्वों, ऐसे लोगों में डा. जगजीत सिंह चौहान, गंगा सिंह ढिल्लो और जफरवाला जैसे देशद्रोही भी शामिल हैं । विदेशी पैसे और हथियारों से पंजाब के भोले-भाले और मेहनती नौजवानों को बरगलाया जा रहा है और जो उनके हाथों में काम होना चाहिये था, हल होना चाहिये था उसके बजाय उनके हाथ में जबर्दस्ती पिस्तौल पकड़ाई जा रही है । मान्यवर, उपसभाध्यक्ष जी, इस तरह से उनका बेनवाश किया जा रहा है और उनके मानसिक धरातल को इस तरह से दूषित किया जा रहा है । विदेशी ट्रेनिंग कैंपों में उनको ट्रेनिंग दी जाती है गोली चलाने की, हत्यायें करने की । वे अपने और बेगाने की पहचान भी भूल गये हैं । उन्होंने इस तरह से उनको मानसिक दृष्टि से दास बना लिया है। वे अपना ही खून बहा रहे हैं और अपने भाई बहनों को पहचानने और अपनी धरती के लोगों को पहचानने में उनकी कोई रुचि नहीं है । माथा, ममता, मोह और इंसानियत से वे गिर चुके हैं। आज

हालत यह है कि अगर औद्योगिक विकास के आंकड़ों को हम देखें तो पंजाब में पूरी तरह से बेरोजगारी फैली हुई है और यह निरन्तर बढ़ती जा रही है । भारत सरकार ने इस स्थिति से निपटने के लिये समय समय पर महत्वपूर्ण कदम उठाये हैं। हमने दो-दो आपरेशन किये और राजनीतिक स्तर पर राजीव गांधी लोंगोवाल समझौता हुआ । आर्थिक क्षेत्र में भी हमने कहीं कोई काम नहीं रोका । कपूरथला में रेलगाड़ियों के डिब्बे बनाने का कारखाना हमने दिया है । जब कि सारे देश में एकता और देश प्रेम की भावना जाग रही है वहां दूसरी ओर कुछ लोग विदेशी शक्तियों के हाथ की कठपुतली बनकर देश की एकता और विशेषकर पंजाब को तोड़ने में लगे हुए हैं । हमारे सदन के एक सदस्य ने जो अपने आप को देश का एक बड़ा क्रिमिनल लायर कहते हैं, हमारे देश की प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी के हत्यारों को फांसी के तख्ते से बचाने के लिये जी जान से अदालतों का दरवाजा खटखटाते है और बाद में वे विदेशों में जाकर विदेशी सांसदों से जो भारत विरोधी हैं और खालिस्तान के समर्थक हैं उनके साथ सांठ-गांठ करके वे भारत विरोधी गतिविधियों में जुटे हुए हैं । मैं इस माननीय सदस्य के संबंध में कुछ महत्वपूर्ण और रोंगटे खड़े कर देने वाली जानकारी अपने इस सदन के माननीय सदस्यों को देना चाहता हूं और इस सदन के माध्यम से देशवासियों के सामने भी रखना चाहता हूं । इस माननीय सदस्य ने जिसका जुबान पर नाम लेने से जुबान अपवित्र हो जाती है, पंजाब के लिये एक भारत मुक्ति मोर्चा नामक संस्था बनाई जो पंजाब में एक वर्ग विशेष से हो रहे भेद-भाव और ज्यादतियों की दास्तान विदेशों में पहुंचा सके । इस काम में बुरी तरह विफल होने के बाद ये श्रीमान अमेरिका और लंदन के दौरों पर गये। उन्होंने अमेरिका की संसदीय पद्धति के अनुसार जो शक्ति सीनेट को मिली हुई है....

**श्री कैलाशपति मिश्र** (बिहार) : प्वाइंट आफ आर्डर ।

**डा० रत्नाकर पाण्डेय :** मैं जो कह रहा हूं वह मैं पूरे उत्तरदायित्व के साथ कह रहा हूं ! मुझे प्रोवोक मत करें । मैं शिष्टता से अपनी बात कह रहा हूं ।

**श्री कैलाश पति मिश्र :** मेरा प्वाइंट आफ आर्डर सुन लीजिये ।

मेरा आपसे एक ही आग्रह है कि अगर व्यक्ति इस सदन का सदस्य है तो उसके अपने ऊपर लगे आरोपों का सफाई देने के लिये पूरा समय मिलना चाहिये ! मैं चेयर को कह रहा हूं ।

**डा. रत्नाकर पाण्डेय :** इस पर चेयर को डिसीजन लेना है ।

मैं अपनी बात कह रहा हूं । मैं कह रहा था कि इस कांड के बाद जो ज्यादतियां हुई विदेशों में पहुंचे और बुरी तरह से भारत मुक्ति मोर्चे में सफल होने के बाद वे अमेरिका और लंदन के दौरे पर गए और अमेरिका की संसदीय पद्धति के अनुसार सेनेटर्स को बहुत अधिक शक्ति मिली हुई है और यह सेनेटर्स वहां पर एडमिनिस्ट्रेशन की पालिसी को भी सब-अटेच कर सकते हैं । माननीय उपसभाध्यक्ष जी, अमेरिका के सेनेटर्स अपनी स्वार्थ पूर्ति के लिये किसी न किसी लाबी से भी जुड़े हुए हैं । अमेरिका के एक सेनेटर हैं जिनका नाम वैली हर्गर है । ये सेनेटर अमेरिका में खालिस्तान के सबसे बड़े समर्थक हैं । इस सेनेटर ने अमेरिका संसद में संशोधन रखवाया ...

SHRI RAM JETHMALANI (Karnataka): Sir, I rise only on this. I have objection to all that is being said.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): He has not uttered any name. What do you want to say?

DR. RATNAKAR PANDEY: I am not uttering any name.

SHRI RAM JETHMALANI: I will reply to this person and you will give me a right...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): What do you want?

SHRI RAM JETHMALANI: Let me finish first. This is a bunch of vicious*

*Expunged as ordered by the Chair.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): He has not taken your name...

DR. RATNAKAR PANDEY: I am not mentioning any name, Sir.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): ...Why do you want to take it upon yourself?

SHRI RAM JETHMALANI: What Sir?

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): He has not uttered your name at all.

SHRI RAM JETHMALANI: What do you think, Sir, of all that is being said? Everything is being said about me. Who is he talking about? (*Interruptions*) You feel that this has nothing to do with me. Why don't you ask him? (*Interruptions*)

SHRI RAM JETHMALANI: Ask him, who he is talking about.

THE VICE-CHAIRMAN: (SHRI JAGESH DESAI): Please sit down. He has not taken your name. (*Interruptions.*).

**डा० रत्नाकर पाण्डेय** : उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं कह रहा था कि उस सेनेटर का नाम वैली हर्गर है और यह सिनेटर अमरीका में खालिस्तान का सबसे बड़ा समर्थक है । इस सिनेटर ने अमरीकी संपद में एक संशोधन रखा कि भारत को सभी प्रकार की डवलपमेंट असिस्टेंस रोक दी जाए जब तक कि अमरीकी प्रधान जार्ज बुश अमरीकी कांग्रेस को यह आश्वासन न दें कि भारत सरकार ने पंजाब में ज्यादतियों से संबंधित लोगों के विरुद्ध कार्यवाही की है । यह संशोधन 212 के मुकाबले 204 मतों से गिर गया सिर्फ थोड़े से वोटों से यह संशोधन अमरीका की सिनेट में पास न हो सका । अगर ऐसा हो जाता तो भारत की स्थिति क्या होती इसकी कल्पना आप कर सकते हैं । मैंने आपके सामने एक सच्चाई को रखा है । अब ध्यान देने की बात यह है कि अपना संशोधन पेश करने से केवल एक घंटा पहले हर्गर और इस सदन में बैठे हुए एक सदस्य जो खालिस्तान के समर्थक हैं जो भारत को एड न दी जाए अमरीका के एक ऐसे सिनेटर से जाकर के बात करते हैं हर्गर ने जब यह संशोधन पेश किया था उसके एक घंटा पहले इन दोनों के बीच में बातचीत हुई और इस सदन में वह सदस्य बैठा हुआ है और अपने ऐसे कार्यों के लिए वह हर्गर से मिलाप एक घंटा पहले (**व्यवधान**) खालिस्तान बनाया जाए भारत में (**व्यवधान**)

SHRI B. SATYANARAYAN REDDY: I want to know who is that person.

SHRI MOTURU HANUMANTHA RAO: He makes allegations against on hon. Member of this House. (*Interruptions*). So he should be given a chance to reply.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): Please sit down.

**श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया** : सच्चाई सुनने की हिम्मत तो रखें। (**व्यवधान**)

**डा० रत्नाकर पाण्डेय** : एक घंटा पहले जब यह मतदान हुआ, हर्गर सदन में गया उसके पहले, इस सदन के एक माननीय सदस्य ने हर्गर से मंत्रणा की, परामर्श किया, मीटिंग की कि भारत में खालिस्तान बनाया जाए, भारत संबंधी जो आर्थिक सहायता अमरीका से मिलती है वह न मिले । (**व्यवधान**)

**श्री चतुरानन मिश्र** : श्रीमन्, मेरा प्वाइंट आफ आर्डर है । अगर वह कहेंगे कि इस सदन के एक माननीय सदस्य और नाम नहीं लेंगे तब तो कल हमारे बारे में शक हो जाएगा (**व्यवधान**)

**श्री सुरेन्द्र सिंह (हरियाणा)** : आप नहीं हैं ।

**श्री चतुरानन मिश्र** : आप जरा सुन लीजिए । आपके बारे में बाहर यह हो सकता है कि आप भी यह आदमी हो सकते हैं । इसलिए यदि बोलना है तो नाम भी लीजिये नहीं तो सबों पर इस तरह से एस्पर्शन मत कीजिये कि इस हाउस का कोई न कोई आदमी वहां पर था (**व्यवधान**)

**डा. रत्नाकर पाण्डेय** : उपसभाध्यक्ष जी, मैं अपनी बात कह रहा था कि अपनी

अमरीकी यात्रा के दौरान दो बार हर्गर से उस सदस्य की भेंट हुई । श्री हर्गर अमरीका में कैलिफोर्निया चुनाव क्षेत्र से आते हैं वहां खालिस्तान समर्थक लोग काफी संख्या में रहते हैं और धनी भी हैं और उस धन से हर्गर जैसे लोगों की खूब सहायता करते हैं । अपनी लंदन यात्रा के दौरान भी उस सदस्य ने लंदन के गुरुद्वारों के अन्दर खालिस्तान समर्थक भाषण दिये और अमरीका में जब उनको गुरुद्वारों में आमंत्रित किया गया **(व्यवधान)**

**श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया :** यह आपत्तिजनक है, नाम क्यों नहीं लेते हैं ? यह तो सन्देह हम पर भी किया जा सकता है **(व्यवधान)** यह क्या है, नाम लिया जाए ।

**डा० रत्नाकर पाण्डेय :** मैं नाम लूंगा, यथासमय लूंगा **(व्यवधान)**

**श्री मुख्तियार सिंह मलिक** (हरियाणा) : यह क्या है, जब वह कहते हैं तो नाम लेना चाहिये, नहीं तो यह तो यहां पर बैठे हुए हर एक सदस्य पर इल्जाम हो सकता है । मेरे पर भी हो सकता है ।

**डा० रत्नाकर पाण्डेय :** आप लोग नहीं हैं । एक सदस्य हैं और चोर की दाढ़ी में तिनका होता है । मैं नाम लूंगा मुझे अपनी बात कहने दीजिये । **(व्यवधान)** प्रत्येक सदस्य को चुनाव घोषणा पत्र पर चुनाव से पहले हस्ताक्षर करने पड़ते हैं । और प्रभुत्ता की रक्षा करेगा और ऐसी ही शपथ उसे सांसद बनने के बाद संसद में लेनी पड़ती है । मैं इस सदन के उस माननीय सदस्य से पूछना चाहता हूं कि क्या उन्होंने संविधान का उल्लंघन नहीं किया है.... **(व्यवधान)** क्या उन्हें देश विरोधी गतिविधियों में भाग लेने के कारण, भारत की एकता को तोड़ने के जुर्म में संसद की सदस्यता से फौरन नहीं खारिज कर देना चाहिए और नेशनल सिक्योरिटी एक्ट के अंतर्गत गिरफ्तार करके मुकदमा नहीं लाया जाना चाहिए । ऐसे सदस्य के पासपोर्ट को जब्त किया जाना चाहिए और....

**THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI):** No, that will not go on record. No body can make any allegations except where he has given notice of to the Chair.

**डा. रत्नाकर पाण्डेय :** मैंने जो कुछ कहा वह प्रमाणपूर्वक कहा है और सारी चीजें सही हैं, अगर कोई एक चीज गलत हो तो उपसभाध्यक्ष जी मुझे जो सजा आपको देनी हो दीजिए.... **(व्यवधान)***

DR. G. VIJAYA MOHAN REDDY (Andhra Pradesh): He should be given a chance to reply.

**श्री कमल मोरारका** (राजस्थान) : पाण्डेय जी, दो मिनट हमको देंगे ।

Sir, we are all supposed to be responsible Members of the Rajya Sabha....

AN HON. MEMBER: Supposed to be?

SHRI KAMAL MORARKA: I cannot go beyond it and say that we are supposed to be, after seeing what is going on. I am choosing my words carefully. Let me make my submission to the Chair. It is right that there are lot of issues on which we have difference of opinion and we will disagree. To disagree is our job. But to disagree, we need not be disagreeable. We need not throw invectives at each other. We need not abuse each other. Now for the last few days, in the absence of Mr. Jethmalani, his name is being taken and lot of things are happening. Today fortunately he is also sitting here. According to me, there are three options and the Chair can rule any of these options. Either you rule that no allegation can be made in the speech without pervious permission of the Chairman, which is according to the rules of the House, in which case neither any name should be taken nor an oblique reference should be made to any Member. Now everybody knows which Member he is talking about. The second option is, which I don't mind if the Chair exercises, let him make all allegations agalnst Mr. Jethmalani and Mr. Jethmalani will have the chance to answer....

*Not recorded.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): I will not allow any Member to make any allegation against another Member.

DR. G. VIJAYA MOHAN REDDY: You have already allowed.

SHRI B. SATYANARAYAN REDDY: It is already on record.

SHRI KAMAL MORARKA: The second option....

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): I will not allow any Member to take the name of any Member.

SHRI D. B. CHANDRE GOWDA (Karnataka): Then what is all this about? He was referring to him only.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): Why do you want to put the cap on your head?

SHRI D. B. CHANDRE GOWDA: No, he said it.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): I have already said that the name will not go on record.

SHRI KAMAL MORARKA: If he makes an allegation even without referring to the name, and if it is obvious whom he is talking about, the Chair can rule, we have no objection, let him make all the allegations, but Mr. Jethmalani will have a chance to reply, which is the principle of natural justice. Mr. Jethmalani should have the chance to reply. The third option is, when we are discussing this delicate issue of Punjab, I do not undertand why should we blame each other for breaking the country. Everybody has taken oath of the Constitution. Our strategy may be different. We as a party may not agree, but we may accuse you of breaking the country and you may accuse for breaking the country. What is the use of all this?

SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN (Tamil Nadu): Sir, ...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): No, no.

SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN: Sir he has yielded to me for a second. What Mr. Morarka was saying, is absolutely right, about the right to disagree. But I want to say one thing more about our having difference of opinion and we should not become disagreeable. I want to remind all the Members that yesterday we were raising a point. I was saying something about Andhra Pradesh Chief Minister. Mr. Satyanarayan Reddy was sitting over there. He said such terrible things about me sitting over there. Was that all right? Where were all of you then?

SHRI KAMAL MORARKA: No, nothing is all right.

SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN: Why didn't you tell them also? He insulted me. How can you allow all those people to insult me? They are trying to intimidate us. Is that all right? (*Interruptions*) He insulted me. Even when he passes me in the corridor he insults me. He does not have the least decorum. I am saying this in his presence. That is perfectly all right! But when we say something political about .. (*Interruptions*)

**डा० रत्नाकर पाण्डेय** : उपसभाध्यक्ष महोदय,.... **(व्यवधान)**

**उपसभाध्यक्ष (श्री जगेश देसाई)** : अब आप समाप्त कीजिए । आपका टाईम हो गया है ।

**डा० रत्नाकर पाण्डेय** : माननीय उपसभाध्यक्षजी, मैं जानना चाहता हूं कि क्या उक्त माननीय सदस्य अमरीकन सेनेटर से नहीं मिले थे और एक घंटा पहले नहीं मिले थे, जिसने भारत विरोधी नीति पर मतदान करवाया कि खालिस्तान बनाया जाए और 204 वोट और 212 वोट का फर्क था ?

अगर यह झूठ हो, तो मुझे जो भी सजा देनी हो, दीजिए । नहीं तो मुझे अपनी भावाव्यक्ति में बाधा मत डालिये । भारत की राष्ट्रीयता के साथ कोई सौदा करे और इस सदन का सदस्य हो, यह बर्दाश्त नहीं किया जाएगा । यह कतई बर्दाश्त नहीं किया जाएगा । धरती माता है और बेटे सब मां का सौदा नहीं किया करते । भारत माता का सौदा करने वालों

को हम बर्दाश्त नहीं करेंगे । इस देश में पंचमागियों को.... **(व्यवधान)**

मुझे कहने दीजिए । भावाव्यक्ति पर नियंत्रण मत लगाइये.... **(व्यवधान)**

**उपसभाध्यक्ष (श्री जगेश देसाई)** उनका समय हो गया है ।.... **(व्यवधान)**

**डा० रत्नाकर पाण्डेय :** माननीय उपसभाध्यक्ष जी, मैं इसी संदर्भ में कहना चाहता हूं कि.... **(व्यवधान)**

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): Dr. Pandey has taken eighteen minutes so far. He has only two more minutes. Not more than two minutes. He should conclude within two minutes.

**डा० रत्नाकर पाण्डेय :** मान्यवर, मुझे पांच मिनट और समय दिया जाए । मेरा सारा समय लोगों ने प्वाइंट आफ आर्डर करके.... **(व्यवधान)**

**उपसभाध्यक्ष (श्री जगेश देसाई) :** नहीं, आप अपनी बात दो मिनट में समाप्त कीजिए ।

**डा० रत्नाकर पाण्डेय :** मुझे पांच मिनट और दीजिए । मैं कहना चाहता हूं कि मैंने 14 जून, 1989 को प्रधान मंत्री का ध्यान आकृष्ट किया था । बम्बई के एक बहुत बड़े तस्कर जिसने करीब 90 करोड़ रुपया का फेरा में उल्लंघन किया है .... **(व्यवधान)**

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): Dr. Pandey, please avoid all such references.

DR. RATNAKAR PANDEY: Sir, this is true. I have signed it and sent it to the Government.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): It is not relevant. It will not go on record.

DR. RATNAKAR PANDEY: *

SHRI PAWAN KUMAR BANSAL (Punjab): * Sir, you should not rule whatever he says. (*Interruptions*)

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): If any Member..(*Interruptions*)

SHRI PAWAN KUMAR BANSAL: Sir, I want to make a submission. Dr. Pandey is making certain allegations. The hon. Member is present here. He can deny that. Dr. Pandey is prepared to face an enquiry. He is saying this with all responsibility. Unless he uses unparliamentary expressions, please do not rule it out. (*Interruptions*)

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): If any Member wants to make any allegation against another hon. Member, he has to give notice to the Chair. (*Interruptions*) No. Without that he cannot do it. This is m ruling. (*Interruptions*)

**डा० रत्नाकर पाण्डेय :** *को बचाने की कोशिश की, यहां तक कि कलकत्ता हाई कोर्ट से स्टे लिया गया ।* की बहिन बम्बई की रहने वाली है और अपने प्रभाव से आज तक इस देश का 90 करोड़ रुपया दबा रखा है, फेरा का गबन करने वाले लोग इस सदन में बैठे हों ।

उपसभाध्यक्ष जी, राष्ट्र पर खतरा अपने देश के पंचमांगियों से है, विदेशियों से हम निपट लेंगे । खालिस्तान की मांग करने वाले जो विदेशों में बैठे हुए लोग है, उनके जो यहां पर बैठे हुए नमाइंदे हैं और जो इस देश में भारत मुक्ति मोर्चा के नाम पर, चाहे सीनेटरों से मिलने के नाम पर, जो भारत के टुकड़े-टुकड़े करना चाहते हों, खालिस्तान बनाना चाहते है, इस देश को बांटना चाहते है, ऐसे लोगों से इस देश की रक्षा करनी होगी ।

खालिस्तान की समस्या ने इन्दिरा गांधी को हमसे छीन लिया और आज ऐसे लोग साजिश कर रहे है कि राजीव गांधी की हत्या करा दी जाए । मैं इस सदन में यह रेकार्ड करवाना चाहता हूं कि विदेशी ताकतों से मिल कर के आज साजिश रची

*Not recorded.

[डा० रत्नाकर पाण्डेय]

जा रही है कि भारत के प्रधान मंत्री, राजीव गांधी, पर आक्रमण करवाया जाए और उन्हें इस धरती से उठा लिया जाए। पंजाब की समस्या हल होगी और इस देश की जनता हल करेगी। इस देश की जनता सतज, व्यास, रावी, जैहलम, चिनाव, सिंध नदियों के पानी को जितना खून चाहिए कोटि-कोटि जनता देगी, लेकिन अपने देश में राम जठमलानी जसे लोगों को*

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): No, no, this will not go on record.

डा० रत्नाकर पाण्डेय : उसे बर्दाश्त हो करेगी और ऐसे लोगों के कारण आज पंजाब की समस्या बनी हुई है। यहां यह जो विनियोग विधेयक इस सदन में हमारे माननीय वित्त मंत्री जी लाए हुए है उसका मैं समथन करता हूं और विश्वास करता हूं कि पंजाब के लोगों के हाथों में बंदूक को जगह काम होगा और उनका मानसिक धरातल जो दूषित कर दिया गया है उस दूषण की जगह ऐसे शीतल सुभित मंद बयार उनके मानस पटल में बहेगी जिससे इस देश में सर्वे भवंतु सुखिन: सर्वे संतुनिरामया" की भावना व्याप्त होगी और इस देश में एक भी व्यक्ति अगर सीमा का अतिक्रमण होता है हमारे पंजाब के सटे हुए बार्डर पर और*

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): No, no. Don't record all this.

डा० रत्नाकर पाण्डेय : ऐसी चीजों से पंजाब को समस्या को हल नहीं किया जा सकता। ऐसे लोगों को डी०आई० आर० में बंद करना चाहिए। और*

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): This will not go on record.

डा० रत्नाकर पाण्डेय : इन शब्दों के साथ, मैं अपने वक्तव्य को समाप्त करता हूं और जो विनियोग विधेयक प्रस्तुत किया गया है इसका मैं समर्थन करता हूं

SHRI RAM JETHMALANI: What is this going on in the House? Youu must prevent this kind of allegations...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): I have said that this will not go on record. Please sit down. (*Interruptions*). I have told them that this will not go on record.

SHRI RAM JETHMALANI:*

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): Now you are doing it. Please sit down. (*Interruptions*).

SHRI M. S. GURUPADASWAMY (Karnataka): He is under attack.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): I have already instructed them not to record it. (*Interruptions*). Nothing will go on record. Any Member saying about any other Member will not go on record. Now, Mr. Chaturanan Mishra will speak. (*Interruptions*).

SHRI RAM JETHMALANI:*

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): Now you are doing it. (*Interruptions*). I condemn the behaviour of Shri Ram Jethmalani. (*Interruptions*). Please sit down.

SHRI RAM JETHMALANI:*

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): I have condemned the behaviour of Mr. Ram Jethmalani. Such kind of allegations made by such a senior Member are to be condemned.

SHRI RAM JETHMALANI: What about that side? You have never condemned their behaviour. You have to condemn that also. This is partisanship.

*Not recorded.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): No, no, everytime I have said that that would not go on record. (*Interruptions*) I have told them not to record.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): No, I have not allowed anybody.... Please sit down now ....I am on my legs now.....No, no, I have not allowed you.... No, no. Please sit down.... Mr. Ahluwalia, please sit down.... It will not go on record. I have said what I wanted to say ....(*Interruptions*)

SHRI B. K. GADHVI: Sir, can I make a very small submission; You have already ruled that unparliamentary utterances will not go on record. I will request you also to condemn the stance of the speech made by the Member. It should be condemned.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): Yes, I have told him. . . . No, nobody can expel any Member. You have no right. We have no righ. Please sit down. Don't demand anything which is not practical. It cannot be done. Please don't demand such things.

श्री चतुरानन मिश्र : उपसभाध्यक्ष महोदय, अभी एक बहुत ही गंभीर समस्या पर यह सदन विचार कर रहा था । लेकिन हम थोड़ा कन्फ्यूजन में पड़ गए थे, यह मंत्री महोदय ने जो विनियोग विधेयक रखा, ऐसा लगा पाण्डेय जी के भाषण से कि सारा रुपया राम जेठमलानी जी को मिलने वाला है और इसलिए एतराज है । बाद में मैंने पढ़ा तो लगा कि नहीं, यह पंजाब के लिए रुपया है । तो यह बहस कर रहे थे जेठमलानी जी पर, कि सारा रुपया उन्हीं को मिलता हो और इसलिए सारा अपना ध्यान उन्होंने इन्हीं पर केन्द्रित किया । यही उनका इस गंभीर समस्या पर रवैया है, यह अत्यंत दुखद है ।

महोदय इस सदन से जब कभी सरकार ने जो कुछ मांगा पंजाब के लिए जितना रुपया उसके लिए मांगा, सदन ने आपको दिया । जो कानून आपने पंजाब के लिए बनाना चाहा, सदन ने पास कर दिया; पूरे सदन ने पास कर दिया । इसी तरह जो प्रस्ताव आपने पंजाब के लिए कहे, सदन ने पास कर दिए । लेकिन अब तो पांच वर्ष हो गए, इंदिरा जी की हत्या के बाद पांच साल से ज्यादा हो गए, फिर भी आपने इन रुपयों को लेकर के, सारे कानूनों को लेकर के पंजाब की समस्या का निदान नहीं निकाला रोज-रोज वहां हत्याएं हो रही हैं, निरपराध लोग मारे जा रहे है । अभी मोगा में जो काण्ड हुआ, उसे आप जानते ही हैं। हमारी पार्टी के वरिष्ठ नेता हाल ही में मारे गए । अखबार का वितरण करना कठिन हो गया है, हॉकर जैसे गरीब आदमी मारे जा रहे हैं, जो कि अखबार बेचते हैं । यानी अखबार की भी स्वतंत्रता खतम हो जाय, इसकी बात हो गयी है रोज हिटलिस्ट पर लोग हैं हमारे । राजनीतिक पार्टियों के लोग जो खालिस्तानियों की खिलाफत करते हैं, उनके लिए काम करना असंभव हो रहा है। अब आप हमको बताइए हम आपसे यही पूछना चाहते हैं कि पांच साल से ज्यादा समय के लिए आपका हम इंतजार करें या अब आपसे मांग करें कि आप नालायक हैं, आपसे नहीं हो पाया और अब दूसरो को संभाल दें । मैं आपसे यही पूछने के लिए आया हूं, दूसरा सवाल मुझे आपसे इस संबंध में नहीं पूछना है ।

महोदय, मैं यह इसलिए पूछ रहा हूं कि जो भी आवश्यक काम था पंजाब की समस्या के निदान के लिए, उस प्रत्येक काम में आप फेल रहे । पहला काम, उपाध्यक्ष महोदय, यह था, यह बात ठीक है कि पंजाब के लोगों का इतिहास बहुत ही गौरवशाली है, स्वतंत्रता संग्राम में उन्होंने बहुत ही बलिदान और कुर्बानियां दीं । हमारे अहलुवालिया साहब ने इस संबंध में उद्धरण भी पेश किए और बिना उद्धरण

[श्री चतुरानन मिश्र]

के भी हम जानते हैं कि ऐसा हुआ लेकिन सवाल यह है उनके खिलाफ तो आज हम कुछ नहीं कर रहे हैं, आज तो हम कर रहे हैं भिंडरवाला साहब के लोगों के खिलाफ, खालिस्तानियों के खिलाफ इतिहास तो हमारा, आपका, सबका उज्जवल है। इस सदन में हमसे, आपसे पहले जो माननीय सदस्य हो गए, उन लोगों ने जो कुछ कहा था, उसी के अनुरूप हम लोग उज्जवल काम कर रहे हैं या नहीं ? यह तो जब प्रोसिडिंग पढ़ेंगे तब पता चलेगा कि हम लोग उसी तरह से हैं या नहीं ? तो इतिहास से तो काम नहीं चलेगा. वर्तमान परिस्थिति पंजाब के अन्दर यह है कि सिख समुदाय का एक बड़ा हिस्सा पाकिस्तान को बार्डर से लगा हुआ है—अमृतसर, गुरुदासपुर, तरनतारन वगैरह, वहां के काफी लोगों के दिमाग में यह बात बैठ गयी है कि ये टेररिस्ट्स उनके हितों के लिए लड़ते हैं, खालिस्तान उनके हक में है हमारे धर्म में लिखा है, इसलिए हमको उसके लिए मरना चाहिए। आप इसे मानें या न मानें लेकिन यह सचाई है और वहां कितना गेहूं उगजता है, कितनी धान उपजती है इससे इसकी तलना नहीं हो सकती। यह बात अवश्य ही विचारणीय है कि आजादी के बाद इस तरह की घटना क्यों घटी और क्यों लोगों का विचार ऐसा बदला है यह आपको सोचना चाहिए कि किस ढंग से राष्ट्र चलाएं ?

महोदय, हमारी पार्टी के बहुत-से लोगों ने अपना जीवन कुर्बान किया है, लेकिन हम इस बात को जानते हैं कि आज पंजाब के अंदर हम 10 परसेंट से ज्यादा गांवों में जा नहीं पाते यह सच्चाई है। कुछ माननीय सदस्यों ने कहा कि बिना हथियार लिए जा सकते हैं। हो सकता है कि उनकी हिट लिस्ट में नाम नहीं होगा लेकिन सच बात तो यह है कि जो खालिस्तान की खिलाफत करेगा, जो आतंकवादियों की खिलाफत करेगा वह वहां नहीं जा सकता। उसे नहीं जाने देंगे। अगर आप चुनाव कराएंगे तो वे वोट नहीं देने देंगे। यह भी सच है कि पंजाब के लोगों ने उसकी गौरवशाली परम्परा को कायम रखा है और वहां हिंदू-सिख दंगे नहीं होने दिए हैं। लेकिन यह भी सच्चाई है कि इन आतंकवादियों के डर से गांवों में जो हिंदुओं का एक छोटा हिस्सा था, वह भागकर शहरों की ओर आया है इसलिए सच्चाई से मुकाबला करने के लिए जरूरी था कि एक राष्ट्रीय अभियान चलाया जाता। हम सब मिलकर इस काम को करते, लेकिन दुर्भाग्य की बात है कि शासक पार्टी के नेताओं ने ऐसा नहीं होने दिया। आप पर हम चार्ज लगाते हैं। आप सबसे बड़ी पार्टी के लोग थे, आप इस अभियान को चलाते। तमाम लोगों को साथ लेते। विरोधी दल के लोगों ने अनेक बार कहा है कि ऐसा राष्ट्रीय अभियान चलाया जाय, लेकिन आपने अपनी पार्टी के संकीर्ण हित के कारण ऐसा नहीं होने दिया। यह अभियान नहीं चलने पाया अगर वहां सभी दल के लोग मिलकर जाते और वहां की जनता को कहते... (व्यवधान)...

**श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया :** पंजाब के डिस्कसन में तो विरोधी पक्ष जाता ही नहीं है।

**श्री चतुरानन मिश्र :** प्रधान मंत्री कोई मीटिंग नहीं बुला रहे हैं। हम लोग बार-बार कह रहे हैं.... (व्यवधान)... आप को क्या पावर है मीटिंग बुलाने का... (व्यवधान)... उनके कहने का महत्व है। कई बार हमने मांग की है कि आप मीटिंग बुलाइए, हम सभी लोग मिलकर कोई रास्ता निकालेंगे... (व्यवधान)... नेशनल इंटीग्रेशन की मीटिंग नहीं बुलाते। कहते हैं, हम बुलाएंगे, हम बुलाएंगे। कब बुलाएंगे ? हम मर जाएंगे तब बुलाएंगे ? देश के टुकड़े-टुकड़े हो जाएंगे तब बुलाएंगे ? चुनाव की तारीख तय हो जाएगी तब बुलाएंगे ? वहां लोग मारे जा रहे हैं, वहां अखबार नहीं चल सकता वहां प्रेस को आजादी नहीं है, वहां लोग घूम नहीं सकते, आप कहते हैं बुलाएंगे। अभी विदेश से आते हैं, लंदन से आते हैं,

अमरीका से आते हैं । देश में आग लगी हुई है और आप कह रहे हैं कि हमने श्रीलंका अखंडता की रक्षा के लिए फौज भेजी हुई हैं । यहां हमारी अखंडता पानी की तरह बह रही है । इसलिए मैं कह रहा हूं कि आप पहल में चूक गए । अगर पहले के नेता होते—नेहरु जी होते, गांधी जी होते या उस कैटेगरी के आदमी होते तो यह नहीं होने देते । संपूर्ण राष्ट्र को विश्वास में लेकर इस समस्या का समाधान निकालते ।

**श्री पवन कुमार बांसल :** वहां आप क्या चाहते हैं....(**व्यवधान**)...

**श्री चतुरानन मिश्र :** हम चाहते हैं कि सभी लोग मिलकर वहां जाते और जनता को कहते ।

**श्री पवन कुमार बांसल :** वहां आपके साथियों ने लोगों को भड़काया था ।

**उपसभाध्यक्ष (श्री जयेश देसाई) :** बांसल जी, उन्हें बोलने दीजिए ।

**श्री चतुरानन मिश्र :** आप राष्ट्र के इस परम् कर्तव्य को पूरा करने में असफल हुए हैं, हम यह कहना चाहते हैं । आपको गद्दी पर रहने का कोई अधिकार नहीं है, हम यह कहना चाहते हैं ।

दूसरी बात मैं यह कहना चाहता हूं कि सरकार की एक यूनिक क्वालिटी है टू एटोगोनाइज एवरी बाडी । हमारे जितने भी पड़ौसी देश थे इन्होंने सब को विरोधी बना दिया । श्रीलंका, पाकिस्तान, बांग्लादेश—सभी को, इन्होंने ऐसी अच्छी विदेश नीति बनायी कि विरोधी बना लिया हैं । अब आप घर में देख लीजिए कि जितनी पालिटिकस पार्टीज हैं, वह हमको टाकिंग टर्म्स में भी नहीं रहने देंगे । राष्ट्रीय समस्याओं के ऊपर भी हम विचार नहीं कर सकते हैं । एक सवाल उठा देंगे कि उन्होंने वहां भाषण दिया । भाषण दिया-जेठमलानी ने तो कौन रोके हुए हैं आपको, चेयरमैन आपके हैं, मोशन ले आइए, डिस्कस कीजिए, और अगर उन्होंने गलत किया हैं तो पनिश कीजिए और नहीं किया हैं तो आप यह सब बंद कीजिए, जैसा आप कह रहे हैं । तो मैं कह रहा था कि अभी पंजाब में इन्होंने क्या किया ? पंजाब में दो किस्म के लोग हैं जो मतभेद रखते हैं । एक कुछ आतंकवादी हैं और दूसरे ऐसे लोग हैं जो आतंकवादी नहीं हैं लेकिन वे भी कुछ अधिकार चाहते हैं । लेकिन आपने अपनी नीति के चलते बादल, बरनाला, मान आदि जितने हैं सबको एक कौम में कर दिया हैं कि तुम सब मिलकर हमारे खिलाफ हो । यह कोई अकलमंदी है क्या ? कोई राज चलाने का रास्ता है क्या ? टोटली पॉलिटिकस फेल्योर है । जैसा मैंने पहले नेशनल केम्पेन चलाने के बारे में कहा, वैसे ही मैं कह रहा हूं कि अगर राज चलाना है तो कम से कम इतना तो देखिए कि मैक्सिमम यूनिटी किन लोगों को लेकर के हम कर सकते हैं अगर हमारे साथ थोड़ी सी भी सहायता, करने के लिए तैयार हो । Enlist their cooperation. This is the call of the moment. लेकिन आप इसकी बजाय इसको जेल में रखो, उसको रखो, यह करो, अगर सारा भारत जेल में ही रह जाएगा तो रहेगा कहां ? अगर आपकी यह बात सच हो कि हम सभी अनपैट्रियाटिक हैं तो देश आप चला लीजिए । यह हो नहीं सकता, इसलिए इस सरकार की एक यूनीक क्वालिटी है कि antagonise maximum number of people. और यह सैक्विड फेल्योर है ।

थर्ड फेल्योर यह है कि बार्डर पर जो सिक्योरिटी होनी चाहिए, सीमा के पार से ट्रेण्ड व्यक्ति नहीं आएं, इसको रोकने में यह असफल रही है । यह आपकी ही असफलता नहीं हैं, अगर हम देखेंगे तो आज विश्व के सारे बार्डर्स स्मगलर्स के हाथों में चले हुए हैं, बहुत कंट्रीज सफर कर रही हैं । लेकिन मंत्री महोदय, हम तो रुपया आपको देते हैं न और इसी उम्मीद से देते हैं कि कम से कम सीमा पार से आप अवैध हथियार नहीं आने देंगे, अवैध व्यक्तियों को आप नहीं आने देंगे, स्मगलस को आप रोक देंगे ।

[श्री चतुरानन मिश्र]

इसमें टोटल फेलियर आ है । आप कुछ नहीं कर पा रहे कुछ नहीं कर पा रहे। हम लोगों पर उछल-उछल कर कूदते हैं लेकिन वहां पर जब हथियार आते हैं तो आप सो रहते हैं, वहां उछलते नहीं । यहां जितना आप कूदते हैं उसका चौथाई हिस्सा वहां भी कूदिए तब देखा जाएगा कि कोई आया था नहीं आया । अब आपकी कार्रवाई ऐसी हो रही है कि पंजाब में तो हो ही गया, अब कश्मीर में भी हाथ लग गया, अब वहां भी आ रहे हैं । अभी तो नहीं बोलेंगे हमारे मटट् साहब, लेकिन भीतर ही भीतर जानते हैं कि ट्रेण्ड लोग आ रहे हैं, कुछ मुट्ठी भर लोग आ रहे हैं लेकिन खुराफात करते चले जा रहे हैं तो वहां से वहां तक चला जाएगा। यहां रेगिस्तान में हम सोचते थे कि कोई नहीं जाएगा वहां पर लेकिन सुनते हैं कि सब हथियार वहां से ही आ रहा है। तो यहां किस मर्ज की दवा है? जब आप बार्डर की हिफाजत नहीं कर सकेंगे, जान माल की हिफाजत नहीं कर सकेंगे, इज्जत की सिफाजत नहीं कर सकेंगे, प्रैस की फ्रीडम की हिफाजत नहीं कर सकेंगे तो हमारा रुपया किसलिए लेंगे, भोजन करने के लिए? इसलिए यह थर्ड फेल्योर है ।

चौथा हमारा प्रश्न है सिखों की भावनाओं की कद्र करने का । अध्यक्ष महोदय, हम एक तरफा नहीं बोलेंगे । बहुत लोग बोलते हैं कि सिख लोगों की भावनाओं की कद्र करें, हमारा ख्याल है सिखों की जायज मांगों की कद्र करें। अगर सिखों की ऐसी भावना हो कि इन्दिरा जी की हत्या हो और मिठाई बंटे तो इसकी हम कद्र नहीं करेंगे, यह हम साफ-साफ कह देना चाहते हैं । अगर सिखों की भावनाओं की कद्र होगी तो मुसलमानों की भी भावनाओं की कद्र होगी हिन्दुओं की भावनाओं की भी कद्र होगी सबकी भावनाओं की कद्र होगी । उनकी कद्र सरकार करने में असफल ही है दिल्ली में रायट हुए, बिहार में, बिहार कलंकित हो गया बोकारो में और कुछ जगहों पर। क्या यह संभव नहीं है कि हम इन मुकदमों का जल्दी से जल्दी फैसला कर दें? कुछ का किया है। गवर्नमेंट कहती है कि हम गुप्त कर रहे हैं और फिर एक दिन कह देंगे कि इतने आदमी का यह हुआ। तो आप गुप्त कीजिए तो आतंकवादी के हाथ में फिर छोड़ दीजिए, वह कहेगा और गुप्त प्रचार करता रहेगा कि सरकार कुछ नहीं करती। इसलिए आपने उसको नहीं किया। तमाम जोधपुर के डेटन्यूज को छोड़ दीजिए यह हम नहीं जानते, लेकिन इतना हम जानते हैं कि बिना मुकदमा चलाए हुए आप इतने बरसों तक किसी को जेल में क्यों रखे हैं। अगर चार्जेज हैं तो मुकदमा कीजिए नहीं तो छोड़ दीजिए। हमारे विधान का यही अर्थ है। जिनके लोग मारे गए वे अत्यंत दुखी हैं, जो दंगा किए हैं उन पर जो मुकदमा आपको चलाना चाहिए वह आप नहीं कर रहे हैं। तो यह जो जायज भावना है सिखों की उनकी कद्र करिए और उसका निराकरण करिए। अगर 5 वर्ष में भी आप नहीं कर सकते हैं तो आप किस लिए रहना चाहते हैं? आप कहिए कि 10 वर्षों तक यह पार्लियामेंट चले। आप नहीं कर सकते हैं तो दूसरों को करने दीजिए।

महोदय, पांचवां विवाद जल विवाद है जिसके बारे में लोंगोवाल ऐग्रीमेंट हुआ था। पहले के जो प्रधान मंत्री थे वे प्राइम मिनिस्टर आफ ऐकार्ड थे अब के जो प्रधान मंत्री हैं वे सब ऐकार्ड हो गए एक एक करके। श्रीलंका का आप देख रहे हैं। रात भर बेकार गई। अब दिन में बातचीत हो रही है। दो दिन बेकार चले गए। खाली बयान आता है कि बहुत सौहार्दपूर्ण वातावरण में बातचीत हो रही है । यह रोज हमको रिपोर्ट मिल रही है, लेकिन सिचुएशन चेन्ज है । अब आपकी सरकार नहीं है हरियाणा में । आपने मौजूदा सरकार से बातचीत की लोंगोवाल ऐग्रीमेंट

के बारे में कि उसका क्या करना चाहिए? राजस्थान सरकार को बुलाकर आपने बात की कि जल विवाद, चंडीगढ़ और दूसरे प्रश्नों पर क्या करना चाहिए? जहां आपकी सरकार है वहां भी आप विफल हैं जहां पर नहीं है वहां भी विफल हैं। सारी चीजें देखकर कुछ समस्या का हल निकालना चाहिए था इस पर आपने कभी सोचा है?

SHRI B. K. GADHVI: Has not Mr. Devi Lal declared that he is not accepting Rajiv-Longowal accord as soon as he came into power?

SHRI CHATURANAN MISHRA: He might have declared but then you should have asked him what is the solution to this national problem. How to do it? It is your job Mr. Minister as you are running the Government, to see that these things are done. You are not here just to go on shouting as we in the Opposition are doing. What is happening? The majority of your Members are behaving like Opposition leaders. Unfortunately, we don't have any writ to run the Government; otherwise you would have started shouting like us. That is what I am telling you. It is your business to go to them, to talk to them and to find out a solution. How long his situation can continue? Should we make it another Lebanon? I am asking you this question as a humble citizen of this country.

हम आपसे पूछना चाहते हैं कि हम बेरुत बना दें हम देश को लेबनान बना दें? आप हमको उसी दिशा में ले जा रहे हैं। इसीलिए मैं कह रहा हूं कि आपको पैसा देना जमुना में रुपया फैंकना है। जब आप इतना भी नहीं कर सकते हैं तो दूसरे दलों की सरकार बनेगी, आप सात समुद्र पार चले जाइए। अगर आप अपनी तुलना कीजिए नेहरू से तो यह होने वाली बात नहीं है।

Once the child is delivered, can it go back to the womb? That is why I am telling you these things. You have to do it.

यह एक ही सरकार के बारे में नहीं है, यह सब सरकारों के बारे में मैं आपसे कह रहा हूं एक महत्वपूर्ण बात और है। आनन्दपुर साहब रेजलूशन ओरिजनल क्या है, यह हम नहीं जानते हैं। हम उसका इम्प्लीमेंटेशन जानते हैं।

The largest number of innocent people must be murdered. This is Anandpur Sahib resolution. This is what I have understood. So, I know the implementation part. I might not have read the original resolution.

इसमें हम आप से कहेंगे कि यह सेंट्रल क्वेश्चन बन गया है। समय नहीं है इसलिए मैं चाहूंगा कि इन 6 मुद्दों पर राष्ट्रीय अभियान चलाइए।

The Akali party has raised about the Centre-State relations. After the Sarkaria Commission's report, have you solved that problem? Have you taken any steps in this regard? आतंकवाद के खिलाफ जितने लोग हों सबसे उनसे पूरा कोआपरेशन लें। उनको साथ लेकर निकलें। सीमा पार के लोग जो आ रहे हैं उनको रोकें, हथियारों को रोकें, इस क्वेश्चन को ला एंड आर्डर का क्वेश्चन न समझ कर पालिटिकल क्वेश्चन नहीं समझना, सिख समुदाय की भावना की कद्र करना, चंडीगढ़ और दूसरे मामलों को लेकर सम्बन्धित सरकारों से बातचीत करें, केन्द्रीय और राज्य का सम्बन्ध बनायें, ये छः प्वाइंट प्रोग्राम लेकर चलिये ताकि कुछ हो सके। लेकिन आपको टाइम ही कहां है। आप जो चला सकते हैं। बाद में जो होगा देखा जायेगा।

**श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया।** दिन में सपने देखने कोई से रोक सकत है क्या?

**श्री चतुरानन मिश्र:** न तो दिन में सपना देखने से रोका जा सकता है और न सपनों में उछलने के बाद गिरने से रोका जा सकता है। दोनों को कोई नहीं रोक सकता। One can meet with an accident also. I can't help it. मैंने आप से यह कहा कि एक बहुत खराब बात हो गयी और वह यह कि जो दंगों के विक्टिम हैं जो किसी तरह से सताए हुए हैं उनको रिलीफ देना हमारा फर्ज है। रिलीफ इस ढंग से दिया जा रहा है जिसमें कम्युनल चीज है। रिलीफ के लिए मंत्री महोदय को कोई भाषण्ड स्थापित करना चाहिए। मैं आपको एक उदाहरण देता हूं कि मेरे कहने का मतलब क्या है। दंगे में जो परिवार मारे गये पंजाब के अंदर उनको पहले 10 हजार मिलता था अब 20 हजार किया गया। अभी उनको 250 रुपये विडोज को पेंशन के रूप में दी जाती है तीन साल के लिए। तीन साल होते है या नहीं यह अलग बात है। अब मैं डिस्क्रिमिनेशन की बात कह रहा हूं। वहां ढाई सौ रुपये हैं तो दिल्ली में 400 रुपये हैं। वहां जितने आतंकवादी हैं वह प्रचार करते हैं कि देखो, पंजाब में 250 रुपये मिल रहे हैं और दिल्ली में 400 मिल रहे हैं। पंजाब से जो आते हैं हिन्दू परिवार के लोग उनको एक हजार रुपये महीना दिया जाता है। यह डिस्क्रिमिनेशन क्यों है। जब यह इतने दिनों से बात हो रही है तो क्या हमारी सरकार एक नियम नहीं बना सकती कि इस तरह की जब बात होती है, जो दंगे के विक्टिम हैं, पंजाब में विक्टिम हैं उनको एक समान ढंग से दिया जायेगा ताकि कम्युनल फीलिंग को लेकर बढ़ावा देने की बात, भेदभाव की बात बता कर लोगों को बहकाने का मौका न मिले। इतना तो हम कम से कम कर सकते हैं। वहां हिन्द समाचार ग्रुप का अखबार है। उन्होंने एक रिलीफ फंड खोला है। जो कमेटी बनायी है उसने वन एंड ए हाफ करोड़ रुपया डिस्ट्रिब्यूट किया है। उसमें वह सब को रख कर चल रहे हैं, कम्युनिस्ट भी हैं, कांग्रसी भी हैं और बीजेपी के लोग भी है, सब लोगों को मिलाकर चल रहे हैं। क्या हम रिलीफ का काम भी नान कम्युनल ढंग से नहीं चला सकते? तमाम लोगों के लिए एक सामान्य सेवा-मिले इतना भी काम नहीं कर सकते? क्या सरकार इस बात को रोक नहीं सकती जो कम्युनल फोर्सेज हैं, कम्युनल ढंग से चल रहे हैं वह ऐसा न करें। एक राष्ट्रीय ढंग के मुताबिक उनसे बातचीत की जाए।

मैं आखिर में एक बात कह कर समाप्त करूंगा। कुछ लोगों ने कहा कि पंजाब में बेरोजगारी बहुत है। मैं बिहार से आता हूं। बिहार से ज्यादा बेरोजगारी पंजाब में नहीं है। अहलुवालिया जी यहां बैठे हैं। बिहार से ज्यादा दरिद्र राज्य भारत में कोई नहीं है। दरिद्रता में इनके शासन में हम फर्स्ट हैं। पहले जब कांग्रेस थे और यहां से जाने लगे तो बिहार स्टुड फोर्थ। तीन स्टेट हमारे से ज्यादा दरिद्र थे लेकिन सिक्स टु कांग्रेस रिजीम कि हम फर्स्ट हो गये। लेकिन दरिद्रता वहां ऐसी है फिर भी वहां के लोग हथियार लेकर नहीं घूमते। अगर पंजाब के लोग चाइना के .47 राइफल लेकर घूमते हैं तो बिहार के लोगों को क्या नहीं लेकर घूमना चाहिए सारे भारत में बेवर्डर खेड़ा करने के लिए। It is not out of poverty. मैं आपको स्पष्ट ढंग से कहना चाहता हूं कि पंजाब में पावर्टी बढ़ी नहीं है। मैं आपको आंकड़े देता हूं। मंत्री महोदय देख लें। I am talking about Punjab only. In 1961, 10 per cent of the landlords had 63 per cent of the total land. In 1971, 10 per cent of the landlords acquired 76 per cent of the land and in 1981, those 10 per cent of the landlords acquired 83 per cent of the land. कंसन्ट्रेशन आफ लैंड होल्डिंग बढ़ रहा है। यह जो आप देख रहे हैं, यह हरित क्रांति की आपकी वेरायटी है। हमारी लाल क्रांति तो गड़बड़ा गई, हमें सक्सेस नहीं मिली, लेकिन आपको मिली है। इसलिए इस हरित क्रांति में जो फ्यूडल लार्ड हैं,

ये मजबूत हो जाएंगे तो हम तो गये ही है, आप भी जाएंगे...(**व्यवधान**) लाल क्रांति के बारे में आप तो प्रोफेसर साहब जानते हैं। आप तो ज्ञानी आदमी हैं। अगर आप नहीं जानते हैं तो क्या किया जाय। आप तो जानते हैं, लेकिन दूसरे के लिए जो इसको नहीं जानता है तो उसके लिए कांसियस डेविल की बात आती है। आप तो जानते हैं, इसलिए आपको नहीं कहूंगा।

मैं यह कह रहा था कि सामन्तवादी तत्वों का उभाड़ इस तरह से आ रहा है और जो डेमोक्रेटिक फार्म आफ सोसायटी हम बनाने की बात कह रहे थे उसमें जो लोग फिट नहीं करते हैं वे आर इन रिवोल्ट। वही बगावत कर रहे हैं। पहले इस देश में हमने कहा कि यह धर्मनिरपेक्ष देश रहेगा। लेकिन धर्मनिरपेक्ष का अर्थ क्या है, कोई नहीं जानता है। योरोप के अन्दर स्टेट और चर्च में बिटर संघर्ष हुआ था, लेकिन यहां ऐसा कुछ नहीं हुआ। राष्ट्रीय आन्दोलन की एक परम्परा थी, एक हवा थी, गांधी जी थे, नेहरू जी थे। Secularism was adopted, but it never became the way of our life. Our Consttution has never become the way of our life. वह बन रहा था, परकोलेट कर रहा था, लेकिन ये फ्यूडल ताकतें उठ खड़ी हो रही हैं। ये ताकतें कास्टिज्म और कम्यूनलिज्म को बढ़ावा देती हैं और इनके विरुद्ध ही रिवोल्ट होता है। इसलिए हमने आपसे कहा कि आप इस पोलिटिकल स्थिति को समझिये और इसका निदान कीजिये। जो पैसा आप मांगते हैं वह तो हम आपको देते रहे हैं और एक बार फिर ले लीजिये। चाहे गंगा में डुबाइये या जमुना में डुबाइये, लेकिन देश को मत डुबाइये। यही मुझे आपसे कहना था।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): What is the source of your information about landholdings?

SHRI CHATURANAN MISHRA: Planning Commission. Should I repeat the figures?

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): No. Figures, I know. I only wanted to know the source of your information. That is all.

**श्री धर्मपाल** (जम्मू और काश्मीर) : उपसभाध्यक्ष जी, पंजाब एप्रोप्रिएशन बिल नं० 2 के जरिये 49,52,49,27,000 रुपये पंजाब की तरक्की के लिए और वहीं से बेकारी के खात्मे के लिए, एग्रीकल्चर को बढ़ावा देने के लिए, इंडस्ट्री को बढ़ावा देने के लिए मांगे गये हैं, उसके समर्थन में मैं खड़ा हुआ हूं। कल से यह बहस चल रही है। विरोधी दल के तीन सदस्य बोले हैं। मैंने उनके विचार बड़े गौर से सुने हैं। मिश्रा जी समेत उन्होंने तीन बातें कही हैं। एक तो यह बात कही गई कि 11 मई 1987 को बरनाला सरकार को जो बर्खास्त किया गया वह गलत किया गया। दूसरी बात यह कही गई और

[श्री धर्मपाल]

वह रेड्डी साहब ने कही कि पंजाब के बारे में जो एग्रीमेंट श्री राजीव गांधी और संत लौंगोवाल के बीच हुआ उसको इम्प्लीमेंट नहीं किया गया । तीसरी बात मिश्रा जी ने कही कि अपोजीशन के साथ मिल कर पंजाब के मसले को हल करना चाहिए था और युनिटी होनी चाहिए थी । य तीन बातें कल से अपोजीशन की तरफ से आई । चूंकि मेरे पास समय कम है, मैं इतना ही कहूंगा कि अगर हम इतिहास को देखें तो हमें पता चलगा कि श्री राजीव गांधी और संत लौंगोवाल में जो एग्रीमेंट हुआ, अकाली दल के बड़े नेता श्री प्रकाश सिंह बादल और श्री गुरचरण सह तोहड़ा इसके हक में नहीं थे और श्री राजीव गांधी जी से मिलने तक भी नहीं आये । इसलिए संत जी को श्री बरनाला और श्री बलवन्त सिंह को लेना पड़ा । संत जी ने दोनों बड़े नेताओं को मनाने की कोशिश की, लेकिन श्री प्रकाश सिंह बादल और श्री गुरचरण सिंह तोहड़ा माने नहीं । उसके बाद पंजाब में इलेक्शन हुए । अकाली दल सत्ता में आया । मैं पूछना चाहता हूं कि किसने तोड़ा अकाली दल की सरकार को ? आज यहां पर बहाने बनाये जाते हैं । श्री प्रकाश सिंह बादल को डिप्टी चीफ मिनिस्टर कहा गया, लेकिन वे चीफ मिनिस्टर बनना चाहते थे । लेकिन यह तो अकाली दल की लेजिस्लेचर पार्टी का काम था कि उसको वह बनाती फिर क्या होता है कि एक बहाना बनाकर, अमृतसर गोल्डन टेम्पल में क्रिमिनल को पकड़ने के लिये पुलिस दाखिल हो गई उस पर कैप्टिन महेन्द्र सिंह वगैरह के इस्तीफे हो गये । उन्होंने इस्तीफा दे दिया और एक और अकाली दल बन गया । तीन अकाली दल अब हैं। पंजाब का मसला हल करने के लिये कभी उनकी यह जुर्रत नहीं हुई, अकाली दल की, कि वह टैरोरिज्म को कंडेम करे। क्योंकि ये डरते थे। कुछ लीडर चाहते थे कि वे जेल में रहे क्योंकि वे डरते थे कि मारे न जाय। ये सब वाकयात हैं मेरे पास समय नहीं है जो कह सकूं। अभी जब आपने रजिस्ट्रेशन आफ पालिटिकल पार्टीज का कहा तो बादल जी मैसेज भेजते हैं कि अमेंड मत कीजिये। अकाली दल के कांस्टिट्यूशन को क्योंकि वह इलेक्शन भी नहीं लड़ सकेंगे। यह हालत हैं । इस पशेमंजर में हमको देखना है जिसके कारण पंजाब का मसला हल नहीं हुआ । इसके लिये जिम्मेदार कौन है? हमारे प्राइम मिनिस्टर राजीव गांधी जी शुरू से चाहते थे कि इस मसले का हल हो और सिविल सतह पर हो। इसलिये एग्रीमेंट हुआ। उस एग्रीमेंट के विरोधी कौन थे ? अकाली दल की सरकार किसने तोड़ी ? अकाली दल की सरकार खुद अकालियों ने तोड़ी। बरनाला की सरकार के लिये आप कहते हैं तो वह क्यों डिसमिस हुई । यह इसलिये डिसमिस हुई क्योंकि इसके बड़े-बड़े मिनिस्टर जैसे चंदू माजरा जो थे उनके पास टैरोरिस्ट ठहरते थे। वह मिनिस्टर जाकर यहां तक कि अमृतसर में वहां के एस०एच०ओ० को थप्पड़ मारा कि फलां एक्सट्रिमिस्ट को छोड़ दो। वे फिर तलवंडी अकाली दल में गये हैं। चाहे जसवंत सिंह हों इनके मुत्तलिक है कि ये टैरोरिस्टों की मदद कर रहे थे और वह उनके घरों

में ठहरते थे। रेंस कमेटी ने 4 हजार टैरोरिस्टों को छोड़ा। उसके बाद उनका क्या रोल रहा। कितनों की भर्ती पुलिस में बरनाला जी के वक्त हुई। इस बुनियाद पर बरनाला सरकार डिसमिस हुई। कल एक बात कही गई। यादव जी कह रहे थे कि बतलाइये जब से वह पर गवर्नर का राज हुआ तब से क्या फर्क है। मैं कहना चाहूंगा कि फर्क यह है कि जब बरनाला जी के समय में कोई टैरोरिस्ट मारा जाता था तो उसकी भोग सरमनी होती थी और बड़े बड़े अकाली दल के नेता उसमें जाते थे तथा वहां पर खालिस्तान जिंदाबाद के नारे लगते थे। उस समय गुरुद्वारों पर कंट्रोल टैरोरिस्ट का था। मैं कहूंगा कि फर्क यही है कि गुरुद्वारों में टैरोरिस्टों का नहीं बल्कि सिरोमणि गुरुद्वारा कमेटी का इंतजाम है। मैं यह भी कहना चाहूंगा कि अब वहां कोई भोग सरमनी नहीं होती और न खालिस्तान जिंदाबाद के नारे लगते हैं। यह फर्क है। यह ठीक है कि मोगा की किलिंग हुई लेकिन यह भी एक तरफ देखिये कि पिछले 6 महीनों में जब हमने यहां डिसकस किया था, कितने टैरोरिस्ट उस समय से मारे जा रहे हैं, ए कैटेगरी के और बी कैटेगरी की टैरोरिस्ट रोज पकड़े जा रहे हैं। मैं यह भी कहना चाहूंगा कि यह जो कत्ल भी हो रहे हैं ये सब टैरोरिस्ट नहीं कर रहे हैं। आप देख लीजिये 1984 के पहले, पंजाब का किसान जो है उसके पास बड़ा धन होता है पैसा होता है और वह कत्ल करवाता था एस०एच०ओ० को पैसा देकर कि फलां को कत्ल करना है। यह हिस्ट्री पंजाब की है देख लीजिये पहले कितने कत्ल होते थे। जो स्मगलर हैं, जिनको पैसा मिलता है, धन मिलता है, जो ड्रग्स का स्मगलिंग करते हैं, आर्म्स की स्मगलिंग करते हैं वे भी यह काम करते हैं। सारे लोगों को टैरोरिस्ट नहीं मार रहे हैं। लेकिन अब ये पकड़े जा रहे हैं, मारे जा रहे हैं जो टैरोरिस्ट हैं। यह फर्क है।

अब मैं मिनिस्टर साहब से कहना चाहूंगा कि टैरोरिस्ट के पास जो वेपन हैं वे सुपीरियर है। इसलिए आपकी आर्मी फोर्स और पुलिस जो है उसका कम्युनिकेशन सिस्टम बेहतर होना चाहिये और उनके पास उनके बेहतर हथियार होने चाहिये। क्योंकि इससे आपकी फोर्सेज की मारल बूस्टिंग होगी और उनमें अच्छा कोआर्डिनेशन होगा। ठीक है कि पुलिस में कुछ लोग हैं, मेरे साथी ने इशारा किया, उनकी स्क्रीनिंग होनी चाहिये। कितने ही उनके साथ मिले हुए हैं और वे उनकी मदद करते हैं। इस बात की तरफ ध्यान देना होगा। यह कहना कि बहां से आर्म्स आ रहे हैं। बहुत लम्बा चोड़ा बार्डर है, फेंसिंग हुई है। हमारे प्रधान मंत्री जी सार्क मीटिंग में भाग लेने के लिये इस्लामाबाद गये और उनकी बेनजीर भुट्टो के साथ बातचीत हुई। उन्होंने वायदा किया कि कैंप बन्द होंगे। लेकिन उनकी भी दिक्कत यह है कि पंजाब में जो चीफ मिनिस्टर बैठे हैं वे जे०एल०एफ० के आदमी हैं। कैंप 12 के करीब चल रहे हैं, हथियार भी आ रहे हैं, मदद भी हो रही है। यही नहीं मेरे अपने प्रदेश में, जम्मू और काश्मीर में वे ट्रेनिंग देकर लोगों को भेज रहे हैं ताकि यहां डिस्टे-

[श्री धर्म पाल]

डिसइंटेग्रेशन हो और तोड़ने की कोशिश हो रही है काश्मीर को यह आप जानते ही हैं कि इंटरनेशनल रिंग्स होती रहीं और अब भी विदेशी ताकत पाकिस्तान पंजाब में जहां यह कर रहा है वहां काश्मीर में भी कर रहा है । वह वहां हथियार भेज रहा है, लोगों को ट्रेनिंग दी जा रही है । बेकारी वहां भी है इसलिये पढ़े लिखे नौजवानों को लालच देकर इस तरह के हालात पैदा कर रहा है । मैं यह कहूंगा कि पंजाब का मसला तो है ही काश्मीर में जो हो रहा है वहां पर भी बेकारी का बहुत बड़ा मसला है । यह जो पैसे की मांग है हमने कहा है कि ज्यादा पैसा देना चाहिये ताकि वहां पर छोटी-छोटी इंडस्ट्री लगे, सी०आर० पी०एफ० में बी०एस०एफ० में मुलाजमत बढ़े, एग्रो-बेस्ड इंडस्ट्री लगे । जो लोग बेकार हैं पढ़े लिखे बेकार हैं उनको काम मिल सके । अभी हमारे काश्मीर में क्या हुआ ? वहां 75-80 के करीब लोग पकड़े गये जब उनको इंटोरेगेट किया गया तो पता चला कि वह नौजवान लड़के एम० ए० डबल एम० ए० पास हैं लेकिन बेकार हैं वहां कोई प्रोजेक्ट नहीं है जिससे उनको काम मिल सके । जैसे आपने पंजाब में ला एंड आर्डर को बेहतर बनाने के लिए 85 करोड़ रुपये दिये हैं मैं गढ़वी साहब से कहूंगा कि जम्मू काश्मीर में भी वह दें क्योंकि वहां भी ऐसे हालात हम फेस कर रहे हैं । हमें भी ट्रेंड पुलिस की जरूरत है, हथियारों की जरूरत है बार्डर भी बंद होना चाहिये क्योंकि यह लोग आपस में मिले हुए हैं । इनको अलग नहीं देख सकते हैं । चाहे जम्मू काश्मीर लिबरेशन फ्रंट हो, चाहे पाकिस्तान में चल रहे ट्रेनिंग कैम्प हों इनका कोई लिंक है और अफगानिस्तान के मुजाहिदीन को आप देख लीजिये इनका कोई आपस में लिंक लगता है इस मुल्क को तोड़ने के लिए, इसको खत्म करने के लिए कोशिशें हो रही हैं । इसकी तरफ भी हमको ध्यान देना है । इसलिए ज्यादा पैसे की मैं आपसे मांग करूंगा । आप पंजाब में ज्यादा पैसा दीजिये । पंजाब में इंडस्ट्री लगाने में, बेकारी का खात्मा करने के लिए पावर प्रोजेक्टस के लिए जो बार्डर पर लोग रहते हैं चाहे पंजाब हो या काश्मीर हो देश की बाकी जगहों और बाकी डिस्ट्रिक्ट्स से ज्यादा मदद उनको होनी चाहिये ताकि वहां पर इम्प्लायमेंट में तरक्की हो । हमारी मुहाफज हमारी फौज हमारी पुलिस कहीं भी मुकाबला नहीं कर सकती है जब तक लोगों का तावुन न हो । मिश्रा जी ने यह कहा कि यूनिटी हो । यूनिटी नजरियाती तौर पर हम-आहंगी होनी चाहिये । अब इनकी यूनिटी बढ़ रही है आप देखेंगे । मैं एक बात की तारीफ जरूर करूंगा पंजाब में जहां कांग्रेस के लोगों को जागृत किया है, हमने 1500 के करीब मीटिंग की हैं, हर हल्के में मीटिंग की है, अब भी वहां हो रही हैं वहां पर कम्युनिस्ट पार्टी आफ इंडिया और पी०सी०एम० ने खुलकर टेररिज्म की मुखालफत की है लेकिन और कोई पोलिटिकल पार्टी जो हैं वह सामने नहीं आई । यह मैंने पहले भी कहा है और मैं अब भी तारीफ करता हूं लेकिन बाकी जो पार्टियां हैं जो हाउस में बोलती हैं वह कभी पंजाब नहीं गए । सख्ती से उन्होंने कभी टेररिज्म को कंडम नहीं किया और न अकाली दल के लीडरों ने किया और न कभी उन्होंने जुर्रत की । पंजाब का

मसला हल करने की कांग्रेस की शुरू से कोशिश रही है और हमारी पार्टी यह चाहती रही है इसलिए पैकेज प्रोग्राम हुआ। कहा जाता था कि जोधपुर डिटेन्यूज को छोड़ दो मसला हल हो जाएगा और उनको छोड़ दिया गया। अकाली दल जिम्मेवार है। बाकी अपोजीशन पार्टियां कहती हैं कि तांडव लो। एक वक्त आया हमने कहा कि चलो सब पार्टियां मिल कर प्रचार करेंगी, टेररिज्म को कंडम करेंगी। हमें याद है कि उन मीटिंगों में कांग्रेस की वो लोग कंडम करने लगे। लोग इकट्ठे हो जाते थे कांग्रेस के नाम पर और कांग्रेस को कंडम करने लगे। हमने देखा कि यह फोरम जो है इसका गलत इस्तेमाल किया जा रहा है इसलिए उसको बंद किया गया। इस सिलसिले में कांग्रेस अपनी कोशिश करती रही। जहां तक अपोजीशन पार्टियों का सवाल है उसके लिए तो मैं यह कहूंगा—

[उपसभाध्यक्ष (श्री वी० नारायणसामी) पीठासीन हुए]

गुफ्तार का वाजी बन तो गया,
किरदार का वाजी बन न सका।

मतलब यह है कि सब जबानी बातें हैं, भाषण बहुत खूबसूरत करते हैं लेकिन जब मौके पर फील्ड पर काम करने के लिए अमल की बात आती है तो कहीं दिखाई नहीं देते हैं। यह अपोजीशन वाले करते हैं। झगड़ा क्या है, झगड़ा टेरिटरी का है और पानी का है। अब जो इंदिरा जो का अकार्ड हुआ उसको छोड़िये लेकिन राजीव गांधी लोंगोवाल अकार्ड के तहत चण्डीगढ़ पंजाब को देने की बात थी। रमैया कमीशन जो बना उसने 45 हजार एकड़ रकबा हरियाणा को देने के लिए और उसको आइडेंटिफाई करने के लिए कहा तब चण्डीगढ़ उसके बदले में पंजाब को मिलेगा। बांसल जी बैठे हुए हैं वह ज्यादा इस पर कह सकेंगे क्योंकि वह इससे ज्यादा वाकिफ हैं। मैं यह पूछना चाहता हूं कि वह किसने आइडेंटिफाई नहीं किया। अगर 45 हजार एकड़ रकबा आइडेंटिफाई करके हरियाणा को दे दिया जाता तो चण्डीगढ़ पंजाब को मिल जाता। तो यह मसला किसने हल नहीं किया ?. मैं कहूंगा आज यह बातें करते हैं। देवीलाल जी जनता दल के लीडर हैं हरियाणा के चीफ मिनिस्टर हैं उन्होंने तो इलेक्शन भी इसी प्वाइंट पर लड़ा और राजीव लौंगोवाल अकार्ड को रिजेक्ट किया, बाकी जनता दल के लीडरों का मुझे तो पता नहीं है। इसी बुनियादी प्वाइंट पर उन्होंने हरियाणा का इलेक्शन लड़ा कि हरियाणा के साथ पानी के मसले पर बेइन्साफी हुई है। और वे तामील नहीं कर रहे हैं। किससे मदद लें ? हम तो चाहते हैं पानी का, टेरीटरी का मसला हल हो, अमन हो, मान हो और वहां पर तरक्की हो। आज जो यह कहा जाता है कि पंजाब में तरक्की नहीं है तो मुझे याद है कि एग्रीकल्चर में 56 लाख टन व्हीट की प्रोक्योरमेंट हुई है, इंडस्ट्रीज नयी लगी हैं, बढ़ावा हुआ है बावजूद टेरोरिज्म के और पंजाब के बहादुर किसानों ने सैलाब लाया है। मैं मिनिस्टर साहब से कहना चाहूंगा कि वहां आपने मदद नहीं दी है, लोगों ने संस्थाओं ने अपने तौर पर किया। आप मदद नहीं कर सके उसके बावजूद भी 56 लाख टन अनाज उन्होंने

[श्री धर्म पाल]

आपके भण्डार में दिया । बहादुर लोग हैं, इंडस्ट्रीज लगा रहे हैं जबकि वहां टेरोरिज्म है । एक बात की और तारीफ है कि वहां भाईचारा रहा, चाहे जितने भी कत्ल हुए कुछ हुआ लेकिन हिंदू सिक्ख के इत्तहाद को कोई वहां से नहीं तोड़ सका ।

मिश्रा जी ने एक बात कही । भाई, राजीव गांधी जी कम्युनलिज्म के लिए नहीं बना रहे हैं । मैं नहीं आपके लिए कहूंगा । अब देखेंगे प्लेटफार्म शेयर करते हैं या नहीं । एजीटेशन को एक महीना कंटीन्यू कर रहे हैं । देखेंगे, एडजस्टमेंट करते हैं कि नहीं । तो यूनिटी किससे हो । नजरियाती तौर पर जिनसे हमारा मेल है, जो सेक्यूलरिज्म, डेमोक्रेसी और समाजवाद में यकीन करते हैं, टेरोरिज्म के खिलाफ खुलकर लड़ना चाहते हैं, उनसे हमारा सोच मिलता है और समझौता हो सकता है । बाकी यह है कि ये पोलिटिकलाइज करना चाहते हैं और कौन नहीं होने देना चाहता । देवीलाल तो शुरू से कहते हैं । तामिलनाडु में मिला दिया । वहां पर भी बुलाया, बात हुई उनकी बादल से, दूसरों से बातें हुई । तो यह है कि सबसे बड़ी रुकावट अकाली दल है । उनके लीडर तो जूरत से कन्डेम्न भी नहीं कर सके । अपनी जान बचाने को डरते रहे । खुश रहे कि जेलों में रहें, बाहर न आयें, शायद टेरोरिस्ट मार न दें और अपोजीशन ने पंजाब के मसले में सिर्फ लिप सिम्पैथी जाहिर की है, मिलकर कोई मदद नहीं की है । प्राइम मिनिस्टर साहब ने एक कैबिनेट सब कमेटी बनायी और उसमें सबको बुलाया गया तो आपकी जनता पार्टी शायद रिजोल्यूशन देकर चली गयी, अकाली दल वाले आये नहीं । किस तरह से यह मसला हल हो ? जबानी बातों से नहीं होगा यह आपको समझा दें । खुद मानते हैं कि नेशनल इश्यू है । इसमें कोई पोलिटिक्स नहीं है और एक ऐसा सरहदी सूबा है जहां पाकिस्तान वाले साजिशें कर रहे हैं, बैरूनी साजिशें वहां हो रही हैं । पड़ोसी प्रदेश जम्मू काश्मीर में भी ये बातें हो रही हैं । तो जो छोटी नीति हमारी वोट लेने वाली है इससे हमें ऊपर उठकर इस मसले का हल बात से करना है जैसा कि प्राइम मिनिस्टर ने भी कहा है । कब उन्होंने कहा कि बात नहीं होगी । जो पोलिटिकल पार्टीज पंजाब में हैं पहले उनका है कि वे इकट्ठी हो जायें वे मिलकर टेरोरिज्म का मुकाबला करें, लोगों को जागृत करें तो फिर नेशनल पार्टियां भी आयेंगी । बुनियादी बात तो यह है । वहां कमेटी हुई तो कोई नहीं मिला । तो सवाल यह है कि जबानी बातों से कुछ नहीं होगा । अमल से होगा ... (समय की घंटी) हमारी कोशिश है कि पंजाब तरक्की करे : पंजाब के लोग बड़े बहादुर हैं और वह इंडस्ट्रीज बढ़ें, पावर प्रोजेक्टस वहां हों, बिजली की कोई दिक्कत न हो, इम्प्लायमेंट के लिए ज्यादा से ज्यादा पैसा हो, और ज्यादा प्रोजेक्टस वहां लगें ताकि टेरोरिज्म की तरफ लोग न जायें । वे लोग अभी भी भर्ती कर रहे हैं और भर्ती करके बाहर भेज रहे हैं । जम्मू काश्मीर में भी यह हो रहा है कि नौजवानों को बरगलाकर कि आपको नौकरी नहीं है, वहां पैसा मिलता है, उनको भी ट्रेनिंग के लिए भेज रहे हैं । तो इसके लिए आपको यह देखना पड़ेगा कि सब लोग साथ दें और इस सिलसिले में इस मौके का फायदा उठाते हुए गढ़वी

जी से यह कहना चाहूंगा कि एक बड़ी देरीना मांग है, यह इससे मिलती नहीं है : सब स्टेट ने मिलकर जम्मू काश्मीर का उस मिनिस्टर्स की मीटिंग में माना है कि हमें आप देते हैं 30 परसेंट या 70 परसेंट और अन्य स्टेट जैसे हिमाचल को 90 परसेंट और कहते हैं कि यह एडजस्टमेंट है, कोई फर्क नहीं है । मैं कहना चाहता हूं गजवी जी कि मेरी स्टेट को इस साल सिर्फ सूद ही 203 करोड़ का देना है और इसलिए आप जो पैसा देते हैं, उसे दे-देंगे फिर डेवलपमेंट हो नहीं सकता और टेरोरिज्म का मसला वहां पर भी है । इस मांग का समर्थन सभी हिल स्टेट्स ने किया है । जम्मू काश्मीर के साथ बेइंसाफी हो रही है । हम प्लानिंग कमीशन को मिले, फाइनेंस डिपार्टमेंट से मिले, हम राजीव गांधी जी से मिले, उनकी उस वक्त जो सेक्रेट्री थी सरला जी उनसे मिले, सब मानते हैं कि वाकई मसला है । सब स्टेट्स ने भी माना कि कोई दिक्कत नहीं है । सिर्फ आसाम और जम्मू काश्मीर है । हम उनके लिए भी मांग करेंगे क्योंकि पहाड़ी लोग हैं, वहां नान कांग्रेस सरकार है । तो जम्मू काश्मीर के लिए सबने समर्थन किया और आप अब कहते हैं कि हमें कुछ नहीं है । हमने 203 करोड़ दे दिया है । सूद से जो बचता है वही डेवलपमेंट पर खर्च होगा और हम सोचते हैं कि पढ़े लिखे लोगों की बेकारी वहां खत्म हो ताकि वहां हालात सुधरें और जो गुमराह कर रहे हैं चाहे जम्मू काश्मीर लिबरेशन फ्रंट हो या दूसरे वे ऐसा न कर सकें ।

इन बातों के साथ मैं इन ग्रांट्स की पुरजोर हिमायत करता हूं और समझता हूं कि यह पैसा ठीक ढंग से अगर वहां की डेवलपमेंटल एक्टिविटीज पर लगेगा और बीच में कुछ गड़बड़ नहीं होगी तो वहां के लोगों की हालत सुधरेगी । शुक्रिया ।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): Mr. Kailash Pati Mishra. Your time is six minutes, please.

**श्री कैलाश पति मिश्र :** आप शुरू में ही प्रतिबंध मत लगाएये । बहुत लम्बे भाषण सुनने को मिले हैं, थोड़ी समय की छूट रखिये ।

उपसभाध्यक्ष जी, भाषणों को सुनने के बाद तो मेरी चिंता और बढ़ गई है । लगता है कि कहीं अनंतकाल तक पंजाब जलता न रहे ।

उपसभाध्यक्ष जी, मुझे याद है कि 1984 में 23 अप्रैल को मैंने शपथ ग्रहण की थी । उसी दिन तत्कालीन स्व-राष्ट्र मंत्री श्रीमान सेठी जी का पंजाब के ऊपर वक्तव्य हुआ और तब से लेकर लगातार पंजाब के ऊपर कभी प्रधान मंत्री, कभी स्व-राष्ट्र मंत्री, कभी और मंत्री का भाषण मैं सुनता जा रहा हूं ।

आज शांति होने के बजाए समस्या दिन-प्रति-दिन और बढ़ती जा रही है, वर्ष बीतते चले जा रहे हैं और भारत माता के एक से एक अनमोल लाल लुटते

[श्री कैलाश पति मिश्र]

चले जा रहे हैं, हत्यायें होती चली जा रही हैं। जब कभी मुझे मेरे मित्र स्मरण आते हैं, तो बड़ी वेदना होती है। 35-36 वर्ष का, एक साथ काम करने वाला मेरा मित्र, भारतीय जनता पार्टी का प्रदेश अध्यक्ष, श्री हिताभिलाषी, आज इस दुनिया में नहीं है।

चौबीस वर्ष का नौजवान, भारतीय जनता पार्टी के यूथ विंग का अध्यक्ष, एक सिख युवक—तनसेर सिंह बहल--24 वर्ष की आयु में मार डाला गया और जिस दिन उसकी हत्या हुई है, उसका विवाह हुए केवल छह महीने हुए थे। पचास से अधिक भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता पंजाब के अंदर मारे गये, और दलों के लोग भी मारे गये। एक से एक रत्न गये, पत्रकार गये, राजनीतिक नेता मारे गये, सार्वजनिक जीवन में काम करने वाले एक नहीं अनगिनत मारे गये।

कभी-कभी लगता है कि क्या सचमुच में ईमानदारी से पंजाब की समस्या का हल निकालने की हम कोशिश कर रहे हैं? कई मित्रों ने जो बताया, मैं उसको दोहराना नहीं चाहता।

मुझे बड़ा दुख है कि प्रधान मंत्री, श्रीमती इन्दिरा गांधी की हत्या हुई। वह हत्या प्रधान मंत्री के आवास में हुई थी, हत्या किसी सीमा पर या दौरा करते समय घर के बाहर नहीं हुई थी! हत्यारे पकड़े गये, लेकिन उस हत्या के बाद दिल्ली हो या कानपुर हो या बोकारो, तीन हजार सिखों की हत्या की गई है।

मैं जरा भारत सरकार से कहना चाहता हूं कि छाती पर हाथ धर कर एक बार टटोलिये, उनका अपराध क्या था, उनका गुनाह क्या था? इसी दिल्ली के अंदर लगभग डेढ़ हजार सिख परिवारों की बहिनें विधवा बन कर भटक रही हैं। इतने दिनों में आपने कितने अपराधियों को पकड़ा, कितनों को सजा दी? मैं वितंडा खड़ा नहीं करना चाहता। अगर उसमें से राजनीतिक कार्यकर्ता किसी भी दल के हों, तो देशहित का यह तकाजा है कि उन्हें फांसी के कटघरे पर चढ़ाइये, उनके ऊपर कोई मुकदमा चलाइये। कोई संकोच मत करिए। लेकिन आप लीपा-पोती करते रहेंगे, तो क्या सिख नौजवानों में कहीं विश्वास न्याय के प्रति जगेगा?

पंजाब के अंदर मौलिक रूप में दो सवाल आकर के खड़े हो गये हैं, एक सिख नौजवानों के हृदय में न्याय की मांग, और पंजाब के निर्दोष व्यक्ति, उसमें सिख भी हैं, हिन्दू भी हैं, उनके अंदर सुरक्षा की मांग। आप दोनों अवसर के ऊपर काफी विफल होते चले जा रहे हैं। उसके कारण स्थिति और बिगड़ रही है। इसी राज्य सभा में आप सुरक्षा पट्टी के लिए यहां एक प्रस्ताव लाये थे और मैं जिस दल का हूं, सारे विरोधी दल से अलग हट कर मैंने सुरक्षा पट्टी के प्रस्ताव को पास कराने के लिए सत्तारूढ़ दल का साथ दिया था। वह सुरक्षा पट्टी कहां गई? क्यों नहीं बन रही है? क्या हो गया आज तक, पंजाब के अंतर्गत षडयंत्र के जहां-जहां पर अड्डे हैं, आप उनको लोकेट कीजिए और सीमा से जुड़े हुए तीन जिले फिरोजपुर, गुरदासपुर, अमृतसर आपका सेक्योरिटी फोर्स वहां सामना करने में विफल हो रहा है। मैंने कहा था मैं पूरे पंजाब की बात नहीं कर रहा हूं लेकिन तीन सीमा पर के जिले ऐसे जल रहे हैं, आप उनको सेना के हवाले क्यों नहीं कर रहे हैं? क्या संकोच दिखाई दे रहा है? सतलुज और व्यास के बीच का वह इलाका मांड का इलाका आज वह शस्त्रागार और षडयंत्र का अड्डा बना हुआ है। सैक्योरिटी फोर्स हों या आपके सिपाही इनके हाथ में हथियार क्या हैं? आतंकवादियों के हाथ में कौन सा हथियार नहीं है? रोज अखबार में छपता है ए०के० 47 मैं कहना चाहता हूं संसार के अंदर आधुनिकतम जितने भी आर्म्स हैं वह आज पंजाब के आतंकवादियों के हाथ में हैं। कभी विचार किया है कि अपनी पुलिस, अपने सेक्योरिटी फोर्स के जवान मैचिंग आर्म्स के साथ उनके सामने खड़े दिखाई दे रहे हैं? मैं कहना चाहता हूं कि उनके हाथ

में इन्फीरियर हथियार हैं। आप सुरक्षा पट्टी नहीं बनाए, आप सीमा को सील नहीं कराएं, आप तस्करी रोक नहीं पा रहे हैं, आने वाले हथियारों को आप रोक नहीं पा रहे हैं और चप्पे-चप्पे में जहां पंजाब के अन्दर ऐसे आर्म्स भरे हुए हैं, जिनको आतंकवादियों से जूझने के लिए आप भिड़ा रहें हैं उनको आप मैचिंग आर्म्स नहीं दे रहे हैं। महोदय, बार-बार कहा जा रहा है सरकार सब का सहयोग चाहती है, सरकार सब का सहयोग चाहती है और जो मन में आता है वही किसी को गाली दे देता है। एक मित्र अभी बोल रहे थे, अब वह केवल कम्युनिस्टों का नाम ले रहे हैं। मेरी समझ में नहीं आ रहा है, अगर उनके मन में यह संदेह खड़ा हो रहा हो कि सारे विरोधी दल आज एकत्रित होते चले जा रहे हैं, एक मंच पर आ रहे हैं तो उसमें से एक की प्रशंसा करो और बाकी को गाली दो, फिर तो किस नीति पर आप चल रहे हैं यह मुझे कहना नहीं है, लेकिन मैं भारतीय जनता पार्टी के बारे में पूछना चाहता हूं। क्या आपको पता नहीं है आनंदपुर के प्रस्ताव को खुले शब्दों में और डट करके भारतीय जनता पार्टी ने हमेशा विरोध किया है, टैरोरिस्ट्स का डट कर विरोध किया है और आज भी हम मांग कर रहे हैं कि न्याय सिखों को दीजिए। श्रीमती गांधी की हत्या के बाद जो हत्याएं हुई हैं उन हत्यारों को पकड़िए। आपने कमीशन बैठाया। उसकी रिपोर्ट आ गई। उसके अन्दर भी जो कुछ नाम संकेतित है आप उन पर मुकदमा नहीं चला रहे हैं। पहले ही जांच हो गई, मैं भड़काना नहीं चाहता हूं नाम लेकर लेकिन मैं फिर दोहराना चाहता हूं कि अगर देश की अखंडता की रक्षा करनी है तो कोई भी अपराधी हो और किसी भी दल का हो, अगर सत्ताधारी दल का भी हो तो कृपा करके भगवान के नाम पर उस पर मुकदमा चलाने में, सजा देने में हिचकिए मत। मैं कहना चाहता हूं कि आज आप हिचक रहे हैं, आप उसके ऊपर पर्दा डाल रहे हैं। अगर पर्दा डालते रहेंगे तो पंजाब की समस्या का क्या हल निकालेंगे? अभी मैं 7–8 जुलाई का "नवभारत टाइम्स" पढ़ रहा था। सदन और देश को जानने का अधिकार है कि मुनि सुशील कुमार को आपने लगाया कप्तान सतीश शर्मा के माध्यम से लगाया। रियासती जी को लगाया, जसबीर रोड़े को लगाया। क्या हुआ, यह तो जरा पता लगे? सदन को पूरा अधिकार है जानने के लिए कि उन प्रयत्नों में क्या निकला? अखबारों में छपा हुआ है कि सुशील मुनि तो इतने नाराज हो गए कि वह खीझकर अमरीका चले गए। आगे हुआ क्या, सितम्बर महीने में प्रधान मंत्री ने पंजाब का दौरा किया और पंजाब में आकर कहा है कि मैं इसके लिए सर्वदलीय सभा बुलाता हूं। सितम्बर निकल गया, अक्तूबर निकल गया। इतने दिन निकल गए, जरा जानना चाहता हूं कि कब आपने निमन्त्रण दिया था कि पंजाब की समस्या के संबंध में विचार करने के लिए विरोधी दलों की सभा है और विरोधी दल इसमें भाग लें? तय कर लेते हैं पहले ही कुछ न कुछ। खेल खेलते रहते हैं राजनीतिक। सन् 1984 में जो घटनाएं घटी हैं, उसका एकमात्र लक्ष्य था देश चूल्हे में जाय, लेकिन कांग्रेस सत्ता पर जीत जाय और यह खेल आप खेलते रहे। मैं आरोप लगाना चाहता हूं कि अभी भी आप वही खेल खेल रहे हैं आगे के चुनावों को देखकर। ... (समय की घंटी) ... आप ठीक तरह से समस्या का हल निकालने के लिए तैयार नहीं हैं। अगर आप निकालना चाहते हैं तो मैं सीधे आपको कुछ सुझाव देना चाहता हूं।

उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं एक मिनिट में खत्म कर रहा हूं। आप यह कबूल कीजिए कि क्यों 1984 में श्रीमती इंदिरा गांधी की हत्या के बाद देश के अंदर जो हत्याएं हुई हैं, अपराधियों के ऊपर मुकदमा आप चलाइए, गुप्त कमरों में चलाने की जरूरत नहीं, सार्वजनिक रूप से उन पर मुकदमा चलाइए और फैसला होने दीजिए। सिखों में न्याय के प्रति विश्वास जगने दीजिए। फिरोजपुर, गुरदासपुर, अमृतसर यह जो जिले हैं, जो आप नहीं संभाल पा रहे हैं, इनको आप

[श्री कैलाशपति मिश्र]

सेना के सुपुर्द करिए । सुरक्षा पट्टी बढ़ाइए । सीमा से लगे हुए जिलों, पाकिस्तान की सीमा से लगी हुई सीमा आप सील करिए । अंत में, एक बार फिर दोहराना चाहता हूं कि जो आप सिक्योरिटी फोर्सेज के जवान लगा रहे हैं, आतंकवादियों के पास जिस प्रकार के हथियार हैं, मेचिंग आर्म्स उनको दीजिए । अगर आप ऐसा नहीं कर सकें और केवल वक्तव्य और भाषण पर ही रहें, तो मैं आग्रह करना चाहता हूं कि जितनी जल्दी आप गद्दी छोड़कर हट जायं, पंजाब समस्या सुलझ जाएगी ।

**श्री ईशदत्त यादव** (उत्तर प्रदेश) : यह आखिरी सजेशन अच्छा है, उपसभाध्यक्ष महोदय ।

SHRI CHITTA BASU (West Bengal): Sir, it is quite clear and clear as daylight that the Punjab policy of the Government, if there is any policy at all, has met with utter failure. As a matter of fact, I raise the doubt whether the Government had any fixed, well thought-out and well orchestrated Punjab policy. If there was any policy with regard to Punjab, it was, let me be allowed to say, it was a policy of drift, it was a policy of procrastination, it was a policy which has no direction, it was a policy which was nothing but to subserve the narrowest partisan interests of the ruling party at the Centre. Therefore, Punjab being a national problem, a solution must rest on the approach of national outlook. The Government's policy was that instead of having a national approach to the problem, it has reduced it to merely a problem of law and order and as a matter of fact I find that even today the CRPF claims success in Punjab. The latest information I have got is that the CRPF claims that they have eliminated 797 terrorists, captured about 4263 weapons. and as of today there are more than 40 battalions of the CRPF in Punjab. Even if this kind of law and order attitude has been assumed by the Government of India, law and order has not improved. The figures say that in 1987 the total number of assassinations or murders was 910 and in 1988 it rose to 2,000 and I have collected from the newspaper reports the figures from January this year up to July 25. It comes to an average of 250 persons being killed in a month. This is on the basis of the information which found place in the newspapers and the press reports. Therefore, even if the Government has taken the attitude of law and order—that is the main thrust of the Government policy with regard to Punjab—in that case also this is a dismal failure.

Here I do not find it a great pleasure for me to refer to what Mr. Ribeiro said. He is nobody here in the opposition; he is a bureaucrat; he is a policeman; he was the I.G. of Punjab and now I think is the Advisor to the Governor of Punjab, Director-General, I am told. And now he says that there should be a change of attitude towards Punjab terrorism. I quote him: "Basically it is difference in perception; I would concentrate very heavily on winning the hearts and the minds of the Sikhs. I would go out of my way to find Chaman Lals". You all know about Mr. Chamanlal; there is no need to repeat. So that very man who said "bullet against the bullet" now says that the approach should be of winning the minds and the hearts of the Sikhs. He further says that if you do them justice, they are bound to come out. This relates to the Sikhs. This means that the Sikhs of Punjab have not received justice from you and this is being admitted by Mr. Ribeiro. It is not the question of anybody in the opposition or about whom you have spoken so much and sprouted venom.

Therefore, I feel—and I would earnestly request the Government to appreciate—that this is not an issue to be approached from a partisan

angle. It is a national issue. From that point of view, so far as the national parties are concerned, they have always extended co-operation, an assured co-operation to the Government in bringing out a political solution of the problem. Never has there been an occasion when the Prime Minister or Mr. Buta Singh approached the opposition to discuss the problem of Punjab and we were found wanting. We have always extended our co-operation. And there was a suggestion from the opposition also that there should be an all-party meet to discuss the Punjab problem and to work out ways and means to meet the situation politically and on a political level. What prevents the Government from convening such an all-party meet on Punjab? Comment of the Prime Minister was a surprise to us when he said that they are not sure about the position the parties will take, and let the parties have their position well-defined and then we shall call them. What is wrong if you call all the parties and give them the opportunity to express their views? What is your objection in accepting that co-operation? But he says that first of all, the parties will have to explain their position. Therefore, this attitude, this narrow, partisan, attitude is not going to solve the Punjab problem. (*Interruption*) Earlier, it was said, it was announced that there would be Panchayat elections, grassroot instruments to fight terrorism. I think they have abandoned this idea now. They have refused to hold Assembly elections in Punjab. But they say that Lok Sabha elections will be held in Punjab. On the one hand, they say that the condition is ripe, the condition is congenial, for holding the Lok Sabha elections. On the other, they say that the situation is not congenial to have the Assembly elections. This only shows that they are not interested in restoring popular rule in Punjab. They are only interested in maintaining their party's partisan attitude and partisan policies. Their partisan policies in regard to Punjab will only lead to disastrous consequences, to the disintegration of the country and to the destruction of the unity of the country. Therefore, Sir, concluding, I would say, the Government, in its wisdom, should abandon this disastrous policy, take a national view of the problem, call all the parties and work out a solution of the Punjab problem. Thank you.

SHRI GHULAM RASOOL MATTO (Jammu and Kashmir): Mr. Vice-Chairman, Sir, while I rise to suport the Demands for Grants in respect of Punjab.... (*Interruptions*) I feel that it is an irony of fate that this House is discussing the Punjab Appropriation Bill. It should have been the representatives of the people of Punjab who should have discussed this and they would have definitely put forth certain suggestions in regard to the Demands for Grants.

I have gone through the papers that were presented to us; the Demands for Grants for the year 1989-90. I find that the absence of the representatives of the people of Punjab has resulted in certain amounts not being properly given or appropriated to the various heads where they were really needed. Mr. Vice-Chairman, I am only going to refer to the revised estimates for the year 1989-90 and compare them with those for the year 1988-89.

SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN: You are the first person to speak something relevant, on the Appropriation Bill.

SHRI P. N. SUKUL (Uttar Pradesh): Other people have been speaking about something else.

SHRI GHULAM RASOOL MATTO: Since we are discussing the Appropriation Bill, I am going to speak only on it, on the relevant points.

PROF. SOURENDRA BHATTACHARJEE (West Bengal): Mr. Matto, everything is relevant under the Appropriation Bill.

SHRI GULAM RASOOL MATTO: But let us first concentrate on the subject-matter, namely, the Appropriation Bill. Of course, I will also not miss speaking a word or two about politics....

PROF. SOURENDRA BHATTACHARJEE: Irrelevant politics.

SHRI GHULAM RASOOL MATTO: ...but let us concentrate on the Appropriation Bill first.

Sir, I find that in the case of agriculture and forestry, there has been an increase of Rs. 18 crores this year. this is laudable. In the case of animal husbandry, there has been an increase of Rs. 3 crores. In regard to co-operation also, there has been some increase. But I find that in regard to education, almost, there has been no increase. As against Rs. 454 crores, there is an increase of only Rs. 8 crores so far as education is concerned.

There has, however, been a tremendous increase in the case of Home Affairs. As against Rs. 211 crores this year, the Government is spending Rs. 245 crores. I can understand that because of the law and order situation in Punjab it has become necessary to spend more, but why is this amount charged to the Punjab funds? This additional amount of Rs. 34 crores on the Home front should have been sustained by the Central Government. This is my point. Even if this amount has been given from the Central fund, but this will remain as loan on the State of Punjab. I would have liked that this amount of Rs. 34 crores should have been taken by the Central Government itself.

Then, Sir, I am very much constrained to find that the allocation this year in the field of health and family welfare is less by 1.30 crores as compared to last year. Had there been an elected representative from Punjab here, he would have fought for more allocation in this important field of health and family welfare.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): Now you are raising the voice on behalf of the Punjab legislators.

SHRI GHULAM RASOOL MATTO: I am trying to do that.

The other important point is with regard to finances and I would request the hon. Minister to react. If I have been able to understand the figures correctly, with regard to finances there is an increase of Rs. 1061 crores as compared to last year. And when I see the analysis of this, I find that about Rs. 400 odd crores are only for interest. Considering the situation in Punjab, I think the Central Government should have been liberal in at least waiving off this amount of Rs. 440 crores. Right now the position is that you are adding to the successor Government, whichever may come in power. They will have to pay this off and this nobody has taken into consideration. If elected representatives from Punjab had been there they would have objected to it. They would have argued that the situation in Punjab is not created as a result of their doings, it is a national problem and it is beyond their control. The nation should subscribe to it and not debited to the Punjab Government—this amount of Rs. 1061 crores more as compared to last year.

I would also like the hon. Minister to react to one more point and that is with regard to the field of food and supplies. Here again there is a quantum jump of Rs. 340 crores. I can understand that this amount is as a result of the buffer stock or purchase of wheat from the Centre, but according to these budget papers this is debited to the Punjab Government. Why should not the Central Government have invested this sum so that the payment of interest would not have fallen on the Punjab Government?

With regard to revenue and rehabilitation there has been an extremely grave situation. I would like the hon. Minister to react on this point also. (*Interruptions*). Nobody is taking

charge of this situation. Last year, on revenue and rehabilitation, there was an allocation of Rs. 140 crores and this year it is only Rs. 44 crores. This has to be taken into consideration. I think when you take this situation into consideration, you will find that justice has not been done to Punjab so far as revenue finances and rehabilitation are concerned.

(The Deputy Chairman in the Chair)

Madam, because of the situation in Punjab, the burden which the Central Government should have taken upon itself is being passed on to the State Government and the successor State Governments will have to bear this burden. This needs to be looked into. I hope the Minister will react to these few observations made by me. At the same time, he should see to it that he is benevolent enough to ensure that this burden does not fall on the Punjab Government, but is borne by the Central Government.

Now coming to the point that my friend raised, there could be no substitute to a popular government. But I would like to tell the Government that there is a lot of talk at present moment. Firstly, there was a talk that there would be only panchayat elections. I could understand the logic and rationale in having panchayat elections before the General Elections. But now there is a talk—although the Government has not pronounced about it—and as an ally I would like to give a word of caution. And that word of caution is this. I understand from the papers that the Government is contemplating having Lok Sabha elections and not the State Assembly elections. This is extremely unjust to the people of Punjab. After all, a Lok Sabha constituency consists of 8 or 10 Assembly constituencies and the same people have to vote for the Assembly elections. In the first instance, I would like the Government to think about it that if they feel that elections cannot be held, then these should not be held both for the Assembly as well as the Lok Sabha. If elections are held only for the Lok Sabha, this will be a great insult to the people of Punjab and I warn the Government that this well have repercussions. If they have to have elections for the Lok Sabha, they must simultaneously hold elections for the State legislature also.

Madam, I have dealt with the relevant portions of Budget...

THE DEPUTY CHAIRMAN: Now you want to deal with the irrelevant portion.

SHRI GHULAM RASOOL MATTO: My last point is that the hon. Prime Minister has stated—and the Home Minister has reiterated— that he will soon be calling an all-party conference to evolve a national policy on Punjab. We in Jammu and Kashmir have a vested interest in peace in Punjab. Only when we have peace in Punjab can we prosper. The latest situation there is that infiltration is taking place into Kashmir via Punjab border and Jammu border. I think we must have a national consensus on the Punjab problem and the Prime Minister should convene an all-party meeting where a national policy on Punjab could be mooted. This is my request through you, Madam, and with these words I support this Bill.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Prof. Sourendra Bhattacharjee. I must tell you that you have very little time. So, please confine yourself to the subject-matter.

PROF. SOURENDRA BHATTACHARJEE: As little as?...You said that I have very little time. Could you indicate any time? As little as?

THE DEPUTY CHAIRMAN: As little as five minutes.

PROF. SOURENDRA BHATTACHARJEE: Good—quite munificent, I should say.

Madam Deputy Chairman, so far as this Appropriation Bill is concerned, one thing may be said at the very outset, that when misappropriations go unchallenged, what else can we do but support the appropriation for the sake of the State of Punjab? But, in my view, that is a subsidiary aspect. The main aspect for which the Government is answerable is, how long would this situation continue with Punjab that Parliament will have to debate on its budget, that there should be wrangling about how to end the serious situation that has been persisting in Punjab for quite a long time?

Our Foreign Minister, sitting in a far-off country—I think it was when France was going to celebrate the bicentenary of the French Revolution —on listening of the death of Mr. Amrithalingam and his colleague, said that the security of the Tamil people in Sri Lanka is a question mark. Simultaneously the question arises, what was the position when under his Home Ministership the Prime Minister of the country was assassinated? Or, this big question mark has been hanging over the border State of Punjab for a pretty long time. Now, from the side of the ruling party the approach has been as if this side is responsible for all that happened or all that is happening in Punjab. Then, why are they at the helm of affairs? They could have gracefully responded to the demand of the Opposition for their resignation and left it to the Opposition to solve their problem. But, naturally, the second part is not feasible even though the first part is still quite possible.

During all these years the Congress (I) has been constantly trying to utilize the Punjab situation to its partisan interests or, keeping an eye on its partisan interests. What shocked me beyond belief was a news item, repeated in different organs, that Mr. Simranjit Singh Mann, who has been prosecuted for conspiracy in the murder of Mrs. Gandhi, was constantly being wooed by the Government of India. They were trying to enlist his support, and I have seen no contradiction from the side of the Government or the Congress (I) Party so far.

Our present Prime Minister's adoration or adulation of Mr. Bhindranwale, when Mr. Gandhi was the General Secretary of the Congress Party, is by now well known—their efforts at trying to play various Sikh groups against one another in order to perpetuate the Congress (I) rule in Punjab, that is, at the cost of the national interest, because this situation in Punjab affects the nation as a whole. So, the Government of India is squarely to blame as it is answerable to the entire nation as to why such a situation should continue in a State like Punjab. I also do not agree—as Mr. Chaturanan Mishra also did not agree—with what Mr. Ahluwalia said regarding unemployment and other things, which he feels are responsible for what has happened in Punjab. If that be so, there are many other parts of the country, not only Bihar, which are much worse off than Punjab, but terrorism has not sprung its face there. Why has it done so in Punjab? This question has to be analysed dispassionately and steps have to be taken again dispassionately. If the Government of the land wants to solve a sensitive problem like this, it should not try to forestall discordant divisions and differences among the political forces in the country. Therefore, if the Government has any lapse, it should own its responsibility in the matter of Punjab and try to consolidate the opinion of those who are concerned with the welfare of the States and try to solve the problem of Punjab.

उपसभापति : श्री राम प्रवेश सिंह। समय की कमी के कारण सब सदस्य कम बोल रहे हैं। कृपया आप भी केवल

मुख्य मुद्दों पर, मुख्य नुक्तों पर बोलिये जो पंजाब के मुताबिक हो

**श्री राम अवधेश सिंह** (बिहार) : 15 मिनट ।

**उपसभापति** : 5 मिनट से ज्यादा नहीं ।

**श्री राम अवधेश सिंह** : कहिये तो न बोलूं।

**उपसभापति** : आप नहीं बोलना चाहते तो मत बोलिये। बोलना है तो 5 मिनट से ज्यादा टाइम नहीं है ।

**श्री राम अवधेश सिंह** : महोदया, यह अप्रोप्रियेशन बिल जो है, आमतौर से इसके विरोध का सवाल नहीं उठता अगर केंद्रीय सरकार की दृष्टि सही होती । लेकिन केंद्रीय सरकार चाहती है कि सारे राज्यों के अधिकारों को छीनकर के वह अपने पास रखे और फेडरलिज्म के ढांचे को तोड़-मरोड़ दे। आज जो पंजाब की समस्या है उसके मूल तीन कारण है । एक तो यह है कि केंद्र सरकार पंजाब की सही शक्ति को नहीं पहचानती और पहचानती है तो उससे बात नहीं करती । दूसरी बात यह है कि सारे मुल्क में पंजाब सहित एकतंत्रीय ढांचे को कायम करना चाहती है । इन्हीं दो मूल कारणों के चलते सारी समस्यायें बिगड़ी हुई हैं। कोई एक दृष्टि केंद्रीय सरकार की आज तक रही नहीं है। शुरू में जब वहां की विधान सभा को भंग किया जाने लगा था तो तर्क दिया गया कि कानून और व्यवस्था की स्थिति बिगड़ गई है। उस वक्त मैंने कहा था कि पंजाब में जितनी औसत हत्यायें होती हैं उससे तीन गुना, पांच गुना अधिक हत्यायें बिहार में होती हैं। उस समय पंजाब में औसतन तीन हत्यायें प्रति दिन होती थी जब कि विधान सभा को भंग किया गया था कानून और व्यवस्था को लेकर। लेकिन आज पंजाब में औसतन 10 हत्यायें होती हैं और बिहार में आज औसतन 15 हत्यायें होती हैं। मैं यह कहना चाहता हूं कि अगर कानून और व्यवस्था ही इसका आधार है तो बिहार की सरकार को पहले भंग किया जाना चाहिये था, कानून और व्यवस्था के आधार पर वहां की सरकार को भंग करके वहां पर राष्ट्रपति शासन लागू करना चाहिये था। लेकिन जब केन्द्र सरकार तर्क देती है तो एक तर्क पर नहीं रहती है। जहां उसको जो तर्क सूट करता है वही सूट करने वाला तर्क रखती है। बिहार में दूसरा तर्क देगी और पंजाब में दूसरा तर्क देगी। मैं पूछना चाहता हूं कि जिस समय कानून व्यवस्था को आधार बना कर पंजाब की विधान सभा को भंग किया गया था क्या उसके बाद से हत्याओं की संख्या बढ़ी है या घटी है? अगर बढ़ी है तो विधान सभा भंग करना कोई इलाज नहीं है। यह बात अपने में समाप्त हो गई। एक बात तो यह है कि आप सत्ता पापुलर गवर्नमेंट को दीजिये। अगर पापुलर गवर्नमेंट को सत्ता नहीं देंगे तो फिर वहां वही हालत होगी और हालत बिगड़ती जाएगी। महोदया, पूरे मुल्क में यह दिल्ली की हकूमत चाहती है कि कानून व्यवस्था के नाम पर हम तहस-नहस करें शासन तन्त्र को और संविधान के ढांचे को। अभी बिहार में जो पंचायतों को चुनाव हुआ है। 1978 के बाद नहीं हुआ। जब जनता पार्टी की सरकार आई थी उस समय हुआ था और 1971 में चुनाव हुआ जब गैर कांग्रेसी सरकार थी बिहार में तब फिर चुनाव हुआ था और 1978 में गैर-कांग्रेसी सरकार आई तब चुनाव हुआ। इसका मतलब यह है कि जो स्थानीय ताकत है उसको आप नकारते हैं और पंजाब का विद्रोह भी उसी दशा की एक कड़ी है। पंजाब का विद्रोह कोई साधारण विद्रोह नहीं है । यह इंगित करता है कि ऐसा विद्रोह सारे देश में होने वाला है। दो साल में हो जाए, चार साल में हो जाए। क्यों होगा? क्योंकि पंजाब के लोग स्वायत्तता को छिनने देना नहीं चाहते हैं और सारे देश में एक परिस्थिति आने वाली है, आज आ जाए, कल आ जाए, दो वर्ष बाद आ जाए। क्योंकि आज मुख्य मन्त्रियों की हैसियत कांग्रेसी राज्यों में क्या रह गई है? आज मुख्य मन्त्री की स्थिति बंधुआ मजदूर की हो गई है। हमारे यहां मुख्य मन्त्री बना दिया जाता है (व्यवधान)

**उपसभापति :** आप पंजाब की बात करिये, बिहार में मत जाइये ।

**श्री राम अवधेश सिंह :** यह क्यों हो रही है? केन्द्रीय सरकार चाहती है बंधुआ मजदूर बना कर पंजाब में भी रखें, बंधुआ मजदूर बना कर बिहार में भी रखें, उत्तर प्रदेश में भी रखें, मध्य प्रदेश में भी रखें । यही मूल कारण है । इस बात को गहराई से समझने के लिए शान्तिपूर्वक दिमाग चाहिये केन्द्रीय मन्त्रियों को । जब तक व इस बीमारी को नहीं समझेंगे ऊपर ऊपर इसका हल ढूंढेंगे तो नहीं मिलने वाला है । आनन्दपुर साहब प्रस्ताव क्या है? उसमें आटोनोमी की मांग है उसमें स्वायत्तता की मांग की गई है । उसका 9 सूत्री प्रस्ताव जो है उसको ध्यान से पढ़ा जाए । उस में पूरे तौर पर आटोनोमी की स्वायत्तता की मांग की गई है । मैं भी उन लोगों में से हूं कि राज्यों को स्वायत्तता दी जाए । संघीय ढांचे में कुछ अधिकार केन्द्रीय सरकार के पास रह सकते हैं लेकिन आज तो दल सत्ता और राज-सत्ता सिमट कर एक व्यक्ति के हाथ में आ गई है । जब संघीय व्यवस्था में फेडरल फार्म आफ गवर्नमेंट में संविधान में एक व्यक्ति के हाथ में राजसत्ता और दल सत्ता दोनों सिमट कर के आ जाएगी तो निश्चित तौर पर इस तरह के विद्रोह होंगे, कहीं पहले होंगे, कहीं बाद में होंगे । मैं यह कहने वाला हूं कि अब बिहार में यह विद्रोह पल रहा है और एक डेढ़ साल के अन्दर पंजाब जैसी स्थिति या उससे भी ज्यादा बदतर स्थिति बिहार में होने वाली है । आज केन्द्रीय सरकार क्या चाहती है? वह चाहती है कि किसी सूबे का मुख्य मन्त्री किसी सूबे का नेता न हो बल्कि हम नौकर की तरह से यहां से नोमीनेट कर दें और उसी को बहाल कर दें । आज चपरासी से भी कम हैसियत एक मुख्य मन्त्री की हो गई है ।

**उपसभापति :** वो मुख्यमन्त्रियों पर विचार-विमर्श कर रहे हैं, पंजाब पर नहीं बोल रहे हैं ।

**श्री राम अवधेश सिंह :** पंजाब पर बोल रहा हूं । आनन्दपुर साहब प्रस्ताव **(व्यवधान)**

**उपसभापति :** पंजाब में तो मुख्य मन्त्री है ही नहीं ।

**श्री राम अवधेश सिंह :** जरा ठीक से सुना जाए । आप को मैं क्या कहूं आप कुर्सी पर हैं । मैं नहीं कह सकता कि आप कांग्रेस पार्टी की हैं ।

SHRI A. G. KULKARNI: (Maharashtra): Madam, you have to take relevant part of his speech.

**श्री राम अवधेश सिंह :** क्वाइट रिलेवेंट । दादा, आपका दिमाग 60 वर्ष से ऊपर हो गया है । इस बात को आप समझ नहीं सकते हैं । नौजवान आदमी इस बात को समझ सकता है । महोदया, मैं यह कह रहा हूं कि .. **(व्यवधान)** आज विद्रोह जो पंजाब में हो रहा है...

**एक माननीय सदस्य :** आप पंजाब पर बोलें ।

**श्री राम अवधेश सिंह :** पंजाब के बारे में बोल रहा हूं । एक कारण है कि वहां के नौजवानों ने अपनी छिनती हुई स्वायत्तता के खिलाफ पहले बगावत की और... **(व्यवधान)**

**ठाकुर जगतपाल सिंह** (मध्य प्रदेश) : इस तरह का जो टेरोरिज्म हो रहा है उसमें आप सहमत हैं कि यह होना चाहिए ।

**श्री राम अवधेश सिंह :** आप लोगों का जो चाल चलन है इससे भी टेरोरिज्म ज्यादा होगा । जो आप लोगों के काम करने का ढंग है, संविधान को तोड़कर मरोड़कर एक व्यक्ति के हाथ में खिलौना बनाने का जो तरीका है इससे सारे देश में टेरोरिज्म होगा, केवल पंजाब में ही नहीं होगा, यह मैं भविष्यवाणी करना चाहता हूं । यह आप नोट कर लीजिए, क्यों, आप जरा सुनिये । दिमाग ठण्डा करके सुनिये । अच्छी बातें कभी-कभी सुना करिये । आपने लौंगोवाल-राजीव समझौता किया । उस समय क्या कहा? सारे देश को बताया कि आनंदपुर साहब

प्रस्ताव ठीक है । फिर आज कहने लगे हैं कि आनंदपुर साहब प्रस्ताव गलत है । शुरू में कहा कि आनंदपुर साहब प्रस्ताव गलत है... (व्यवधान) बिल्कुल आपने कहा । राजीव लौंगोवाल समझौता जिस समय हुआ, आप तमाम लोगों ने एक स्वर से कहा कि आनंदपुर साहब प्रस्ताव बहुत हद तक ठीक है ।.. (व्यवधान) बिल्कुल कहा है । आप रिकार्ड निकालिए ...(व्यवधान) आपने एकार्ड जो किया है वह ले आइये, Let us place it on the Table of the House.

आप अपने स्टैंड्र्ड को, मानदण्ड को रोज बदलते रहते हैं । मैं यह कहना चाहता हूं कि जो सूट करता है उस समय आप उस बात को बोल देते हैं कि ठीक है और जो सूट नहीं करता है, तुरंत बदल देते हैं । गिरगिट जैसे रंग बदलते हैं ।

उपसभापति : जानवरों की बात इस हाउस में मत कीजिए । सुनिये गिरगिट की बात मत लाइये ।

श्री राम अवधेश सिंह : सरकार रोज रंग बदलती है

उपसभापति : हम लोगों ने सुबह टट्टू की बात नहीं की इसलिए गिरगिट की बात मत कहिए

श्री राम अवधेश सिंह : गिरगिट मुहावरा है ।

उपसभापति : नहीं । वह भी मुहावरा था हमने मना कर दिया ।

श्री राम अवधेश सिंह : ऐसा नहीं करिये । गिरगट पालियामेंट्री है । वह तो एक मुहावरा है कि "गिरगिट जैसे रंग बदलना" मतलब जल्दी जल्दी रंग बदलना, जल्दी जल्दी बात बदलना । यह अन-पार्लियामेंट्री नहीं है ।

उपसभापति : राम अवधेश सिंहजी, अब आप कृपया अपना भाषण खत्म करिये ।

श्री राम अवधेश सिंह : मैं समेट रहा हूं । महोदया, मैं यही कह रहा था कि यह सद्बुद्धि आये भारत सरकार को, और गहराई से विचार करे कि राज्य सरकारों को बंधुआ मजदूर नहीं बनाये...

उपसभापति : अब आप बंधुआ मजदूरों से बाहर निकलिए ।

श्री राम अवधेश सिंह : राजसत्ता को एक व्यक्ति के हाथ में नहीं समेटें और मुख्य मंत्री जो सूबे के हों उनका चुनाव करायें...

उपसभापति : रिपीट मत करिये । अगर आप रिपीट करेंगे तो रिकार्ड में नहीं आयेगा... (व्यवधान) पंजाब पर बोलिए और खत्म कीजिए । आपका टाइम हो गया है...(समय की घंटी)

श्री राम अवधेश सिंह : थोड़ा सा और ।

उपसभापति : नहीं नहीं, I am calling Mr. Ram Jethmalani. You please sit down.

श्री राम अवधेश सिंह : उपसभापति महोदया, मैं यह कह रहा हूं कि पंजाब की समस्या का समाधान राजनैतिक हल होगा । इसने राजनैतिक तरीके से उन लोगों से बात करिये जिनके पास शक्ति है । आप हमेशा उन लोगों से समझौता करते हैं जिनके पास शक्ति नहीं हैं ।*

THE DEPUTY CHAIRMAN: Don't write anything which is beyond Punjab. I won't allow anything about Sri Lanka, Bihar and all that. You speak on Punjab. पंजाब पर बोलिए ।

श्री राम अवधेश सिंह : आप क्या बोल रही है ।

उपसभापति : मैं ठीक बात बोल रही हूं ।

श्री राम अवधेश सिंह : मैं यही कह रहा हूं कि यह एप्रोप्रिएशन बिल है लेकिन आप इसको लोक सभा से मत पास कराइये,

*Not recorded.

[श्री रामअवधेश सिंह]

आप विधान सभा से पास कराइये। अब बार ऐसा नहीं किया है। पार्लियामेंट की मुहर लगाई है इस पर। बल्कि आप वहां चुनाव कराइये, राजनीतिक हल ढूंढिये और यह बहाना मत करिए कि वहां पर चुनाव कराने लायक स्थिति नहीं है। वहां चुनाव कराने लायक परिस्थिति है और पहले से वह बदतर होती जा रही है।

जितना आप पापुलर गवर्नमेंट की संभावना को नकारेंगे, उतना ही वहां की स्थिति बिगड़ती जाएगी। मैं चाहता हूं कि सारे देश में पंजाब जैसी स्थिति नहीं हो। इसलिए जो अध्यक्षीय प्रणाली का कांग्रेस पार्टी का विधान है, उसके तहत राज्य नहीं हो, संसदीय पार्टी का विधान बना कर सारे राज्यों के मुख्य मंत्रियों और राज्यों को स्वायत्तता दी जाए, यह नहीं कि दिल्ली सब को हड़प जाए, सब के अधिकार छीन ले, तो सारा देश पंजाब होगा।

धन्यवाद।

THE DEPUTY CHAIRMAN: Shri Ram Jethmalani: Jethmalaniji, your party's time is only two minutes. I will give you five minutes. Please contine yourself to the time limit.

SHRI RAM JETHMALANI: Thank you, Madam, for your generosity. But I may stretch a little bit more. While you were not here, something has happened and that requires a little more time than this. Anyway .....

... (*Interruption*)

THE DEPUTY CHAIRMAN: Just a minute. The person who spoke on your party's behalf took most of the time. So there are only two minutes left for your party. However, you can take five minutes.

SHRI RAM JETHMALANI: I see that I am speaking as a result of your generosity to me.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Not really.

SHRI RAM JETHMALANI: Madam Deputy Chairman, there are two parts of my speech. In the first part, I wish to speak about that unnamed Member of this House who went to London, who went to Washington and is supposed to have indulged in some highly prejudicial activities. Yes. That Member happens to be me. I read the Government's white-paper published after the Blue-star action in which it was mentioned that the cry of Khalistan does not originate in India but it orginates from individuals and organisations abroad. That propaganda has been carried on ever since that there are a lot of people outside the country who are not only sustaining this demand but actively (*Interruptions*) .. encouraging it and actively financing it. According to me, it was, therefore, necessary that people who believed in the unity and integrity of this country and believed in furthering its interests must speak to people outside the country as well. Yes. This gentleman did not seek an invitation— (*Interruptions*).

SHRI HARVENDRA SINGH HANSPAL (Punjab): I am on a point of order.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Jethmalani, he is on a point of orders.

SHRI HARVENDRA SINGH HANSPAL: Madam, are we discussing Khalistan at the moment?

THE DEPUTY CHAIRMAN: We are discussing Punjab.

SHRI HARVENDRA SINGH HANSPAL: No, we are not discussing Punjab.

SHRI RAM JETHMALANI: Yes, I am speaking on Punjab. (*Interruptions*).

SHRI HARVENDRA SINGH HANSPAL: Madam, in the list of business, it is stated, "That the Bill to authorise

payment and appropriation of certain sums from and out of the Consolidated Fund of state...". We are discussing this, not Punjab, nor Khalistan.

SHRI RAM JETHMALANI: Madam Deputy Chairman, did you hear what was said on this Appropration Bill while you were not here? (*Interruptions*).

SHRI HARVENDRA SINGH HANSPAL: Madam, I want your ruling.

THE DEPUTY CHAIRMAN: We are discussing the Punjab Appropriation (No. 2) Bill, 1989.

SHRI HARVENDRA SINGH HANSPAL: Not the Punjab Problem, nor khalistan. (*Interruptions*).

SHRI RAM JETHMALANI: Madam, in the first Gurdwara in the morning, he told his assembly audience:

> "I am a citizen of India. My aim is to strengthen the democracy, secularism, communal harmony and the unity of India. I want to strengthen the independence and sovereignty of the country and it is my firm conviction that in a country where the rights of even one citizen are not safeguarded, that country might today or tomorrow lose its sovereignty."
> (*Interruptions*)

THE DEPUTY CHAIRMAN: Are you giving your personal explanations? (*Interruptions*)

SHRI RAM JETHMALANI: Madam, what is all this? (*Interruptions*).

THE DEPUTY CHAIRMAN: Let me find out what he is speaking on. Are you making your personal explanations?

SHRI RAM JETHMALANI: No. Right here, while you were not in the Chair, it was said that the Punjab problem cannot be solved because of the activities of a Member of this House. I want to deal with that argument saying that the Punjab problem is not solved for reasons other than that. (*Interruptions*). Then he said, "Whatever has been said in praise of him or about his services, he is a selfish Indian," and my selfishness is that I want the cause of Indian independence and unity to be strengthened. Then in the second speech which he delivered at the Shepherd Bush he told his audience that "a brilliant galaxy of men and women who participated in the freedom struggle and brought to us our independence finally sat down and wrote for us a holy book. Each religion has a holy book. So has the religion of India. They called it the Constitution of India. The philosophy and principles of that Constitution are adopted as the philosophy and principles of my political life. I accept them as a luminous lamp by the light of which I tread the path of democracy." Both the speeches have been played on the original tapes to the members of the press corps. Along with my letter, the transcripts of that speech both in Hindi and translated in English are available and I challenge any Member of this House to find out a single word which supports Khalistan or supports partition of this country. I have maintained it and I wish to declare here and now that I was a victim of the partition of India and I hate the very idea of another partition. And I have said that I shall give the last drop of my blood to prevent another partition of this country.**I shall not do so ever in my life...

SHRI SYED SIBTEY RAZI (Uttar Pradesh): I object to this. He is casting aspersions on the Members of this House. He has no right to allege such things. He should mention the name of such Members. (*Interruptions*). This is jugglery of words. We know what he is saying.
(*Interruptions*)

THE DEPUTY CHAIRMAN: Please sit down. Let me deal with him. Mr. Jethmalani, it is not proper for you

*Expunged as ordered by the Chair.

[The Deputy Chairman]

to cast an aspersion on any Member of this House. So better not make any allegation

SHRI RAM JETHMALANI: Do you know what was being said here? You should have been here to hear what was said here.

SHRI VIRENDRA VERMA (Uttar Pradesh): Some have said certain things. To much has been said here. So let him give this reply.

SHRI B. K. GADHVI: I would submit whatever Members have said, any insinuating reference to anyone in this House is uncalled for.

DR. G. VIJAYA MOHAN REDDY (Andhra Pradesh): You were present here.

SHRI B. K. GADHVI: I say I ask the Chair to condemn any reference insinuating anybody in this House and it should not go on record. Therefore, it should be expunged.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Jethmalani, you see if some Members made some allegations and now if you are doing that, you are not doing the right thing.

SHRI RAM JETHMALANI: If you say that you will expunge what they said, I shall forget about all that...

THE DEPUTY CHAIRMAN: I shall expunge everything...

SHRI RAM JETHMALANI: Will you?

THE DEPUTY CHAIRMAN: Yes. But I would also like to tell you that you had your time; now you have to finish your speech.

SHRI RAM JETHMALANI: This is not fair.

DR. G. VIJAYA MOHAN REDDY: Give him some more time.

THE DEPUTY CHAIRMAN: If you want me to give him more time, then why don't you give your own time to him?

SHRI RAM JETHMALANI: I have not taken even five minutes.

THE DEPUTY CHAIRMAN: You have taken five minutes already.

SHRI RAM JETHMALANI: My five mintues are taken by them and by you. This is not fair. (*Interruptions*)

SHRI SYED SIBTEY RAZI: We condemn his words... (*Interruption*)..

SHRI VIRENDRA VERMA: Kindly try to hear him.. (*Interruptions*)..

SHRI RAM JETHMALANI: Now I take it that I have still four minutes left.. (*Interruptions*)..

THE DEPUTY CHAIRMAN: No. Only two minutes are left. I am very sorry that those Members who ask him to speak do not give their time. Why don't they give their time? I won't mind it then even if it is to be twenty minutes .. (*Interruptions*)... When he has no time, how can I give him?... (*Interruptions*)...

SHRI RAM JETHMALANI: Madam Deputy Chairman... (*Interruptions*).. Madam Deputy Chairman, I am not here to convince anybody that my version of events is true. But I am doing it for the purpose of keeping the record of this House straight.

I believe that the Government and its spokesmen have deliberately decided upon a policy of inventing lies and charges against me and that has been going on for the last so many days... (*Interruptions*)... .

SHRI V. NARAYANASAMY: Is it not a fact, Mr. Jethmalani... (*Interruptions*)...

SHRI RAM JETHMALANI: Madam, they are following the example of Hitler... (*Interruptions*)... that if you go on repeating lies, one day they will stick... (*Interruptions*)... I wish only to say that I leave it to the judgment of God, (*Interruptions*).. I leave it to the judgment of posterity, and I leave

it to the judgment of the people. But I wish to remain them of the sad fate which overtook Hitler because of those lies... (*Interruptions*)... I hope God will save them from this fate... (*Interruptions*)

श्री जगतपाल सिंह ठाकुर : उपसभापति महोदया, मेरा पाइंट आफ आर्डर है । यह जो इन्होंने बोला है हिटलर का, इसे रिकार्ड से निकाल दिया जाय ।

THE DEPUTY CHAIRMAN: I will look into it... (*Interruptions*)...

SHRI JAGATPAL SINGH THAKUR: We will tell you whether you are a Hitler or whether we are Hitelr... (*Interruptions*)...

SHRI RAM JETHMALANI: I know your past record. You have called Jayaprakash Narayan and Acharya Kripalani as Hitlers.. (*Interruptions*). So, I know all of you. (*Interruptions*) ...Now, Madam, let me offer my solution to the Punjab problem and that is why I am opposing this Appropriation Bill because you are not following the correct policy in Punjab. I heartily endorse what my colleague from the BJP said, that unless you provide a sense of dignity, equality before Law and Justice to the entire Sikh Population, you well never solve this problem. Therefore, the first and foremost thing you have to do, the most conspicuous step that you have to take, is to punish the criminals, the Post—Indira Gandhi assasination assassin of 1984. Unless you take that first step, you are not going to Solve this Punjab problem. And now, what I have been saying for the last few years is—and that is my only difference with the members of the ruling establishment and even with some of my colleagues once upon a time—that I have been an opponent of the bullet—for-bullet policy, but I have been an advocate of another policy, and I have said time and again that the Ray—Rebeiro method will not solve the problem. And, Madam, now it is one of the most happy occasions in my life that I stand vindicated by Mr. Rebeiro himself. I want this Government to ponder over what Mr. Rebeiro has publicly confessed, first, on the 15th of July and then on the 30th of July. In these two public confessions he has said that we have been doing only half the job and the other half, which is more important than the first half, is winning the hearts of the Sikhs, winning the hearts of the Sikh population, and this is the phenomenon, this is the aspect of our duty, which we have totally ignored. This is precisely what I have been saying. Madam, I claim that whatever I have said and done in this country is with a view to making the Sikhs feel that they are not orphans, that they can repose confidence in the Hindus. When the Supreme Court released one person, my reaction was, "My Sikh brethren, please bear in mind that it is the three Hindu Judges of the Supreme Court who have released Balbir Singh. Therefore, have confidence in the Hindus, have confidence in the majority community, and live in Hindu-Sikh amity.". This is what I have said and this is what I wish to repeat. And, Madam, so long as this Government does not understand this basic truth that the Sikh will be willing to forgive and forget in five minutes anything, but he will not forget or forgive inujstice for fifty years, unless you grasp this basic fact, you will never solve this Punjab problem. And just because—I will take half-a-minuite—and just because you will not take the first, elementary step which my friend from the BJP advocated because it is your own people who are involved, people whom you want to protect and therefore you will never take that step, your Government can never solve this problem. Therefore, logically your Government must be thrown out of power if the Punjab problem has ever to be solved. (*Interruptions*)...

डा० रत्नाकर पाण्डेय : ये ... (व्यवधान)... वी० पी० सिंह को प्रधान मंत्री

[डा० रत्नाकर पाण्डेय]

बनाना चाहते हैं । भारतीय जनता का इनसे विश्वास उठ गया है ।

THE DEPUTY CHAIRMAN: Half-a-minute is over.

SHRI RAM JETHMALANI: Last, one quarter of a minute.

Unless you withdraw the bogus and false cases which you have instituted and talk to the people who really matter in the polifices of Punjab, you will never solve this probelm. Restore democratic process and instal an elected Government. (*Interruptions*) Carry out the accord which you have arrived at with the representatives of Punjab. Please allow Amnesty Inaternational and other organizations to come and see what we are doing in Punjab. By this way you will destroy the biggest criticism of your party. Unless you do that, you will not be able to satisfy everybody that nothing is wrong. Today bear in mind that Mr. Ribeiro is on public record. (*Interruptions*)..

AN HON. MEMBER: We do not require help from outside. (*Interruptions*)

SHRI RAM JETHMALANI: Mr. Ribeiro admits to police hit-squad. He said that the hit-squad have very frequently got out of control. Please stop this. Not until you stop it will you be able to solve the Punjab problem.

Last sentence. The greatest condemnation of your policy is that after such a long duration of President's rule the number of terrorists has increased, the number of violent people has increased and the number of murders has increased. This is your greatest condemnation. This is something to be ashamed of, and not to shout about and not to be proud about. (*Interruptions*)

SHRI SYED SIBTEY RAZI: With your permission, very humbly I will ask for an explanation from my learned colleague ... (*Interruptions*) Madam, he said that when judges sit in the Supreme Court or High Courts, they are either Hindus or Muslims or Sikhs. What he projected . . .

SHRI RAM JETHMALANI: I do not want to answer this very silly question.

SHRI SYED SIBTEY RAZI: He said that the judges who gave orders for acquittal were Hindus. What is the question here? (*Interruptions*). Is it religion? He has tried to malign the judiciary of India. Secondly, I will ask: Does he not have any confidence in the judicial system of our country and that is why he is trying to invite Amnesty International to India? Now, I want him to clarify these two points. (*Interruptions*) Don't you have confidence in the judiciary?

श्री सीता राम केसरी (बिहार) : सैयद रजी स हब, इनको छोड़िये ।

THE DEPUTY CHAIRMAN: Shri Pawan Kumar Bansal.

SHRI PAWAN KUMAR BANSAL: Madam, coming from Punjab as I do, I wanted to take this opportunity only to refer to certain economic issues confronting the States and did not want to refer to Mr. Jethmalani at all, excepting that there are some remarks in his speech which call for some response from this side.

Madam, he referred to Hitler. I am sorry, I must frankly admit, I could not get the entire substance of what he said. But reference to Hitler does remind me of his lieutenant called Goebbels. Madam, it is unfortunate today that senior people like Mr. Jethmalani have tried to out-Goebbel Goebbels himself. Madam, I do not want and I do not claim the right to challenge or cast aspersions on anybody's patriotism. But as a citizen of this country I do expect every citizen to be particularly clear in his mind about the various consequences that

his acts could have on our polity. Madam, I have again no objection to an hon. Member visiting any country outside and giving vent to his feelings about various situations; may be in our country also. But it does become a cause of serious concern to all of us when we learn that a Senator in the States takes up an issue against our country and tries to mobilise opinion against our country in the U.S. Congress and Senate. Mr. Jethmalani was quite emphatic in quoting from his speeches which he made to various people and various organisations when he was abroad. But he did not give us the benefit of clearing his stand as to what was the nature of the meetings that he had with that Senator. Maybe the media misquoted him. But this was an occasion when he should have come before the House and made amply clear as to what was the stand of the people who met him and what was his response to them.

SHRI RAM JETHMALANI: You have read the letter in the press. Now what is the point in hiding all that? You know that.

SHRI PAWAN KUMAR BANSAL: Madam, many things have been said in the press. Mr. Jethmalani referred to Amnesty International coming here to oversee the working of our system. He also wants a panel of jurists from outside India to oversee the working of our courts.

SHRI RAM JETHMALANI: We have sent observers to South Africa to oversee trials there.

SHRI PAWAN KUMAR BANSAL: Yes, observers under the aegis of the the United Nations and we enjoy a place of pride in the United Nations. Madam, if by any act—I am distinguishing between one's Words and one's acts—you compare the position prevailing in India with those countries which have yet to taste the fruits of independence and democracy, I suppose it will be a sad day for us. During the last 40 Years, India has earned a place for itself in the comity of nations. India today is looked upon with respect by all those countries—and they number over a 100—who' taking a cue from India and making India as a symbol of struggle against any sort of discrimination' went in for different liberation movements and ultimately liberated their countries. If today we were to go around and say that in India there is violation of human rights and that in India today the Government discriminates between people of one religious group and of another religious denomination, I want to say that we are doing no servose to the country. If someone says that he has been a victim of partition and does not want partition of the country again, I wan to take those words at the face value. But, Madam, to allege that some of us here would not mind, another partition of the country if we are assured perpetual power would be nothing but a dishonest traversity of facts. I want to remind the hon. Member that it was Shrimati Indira Gandhi who gave her life for the unity and integrity of the country. We being her sincere followwers, are always prepared to act the way she did.

SHRI RAM JETHMALANI: I am a follower of your father. But I am a little older.

SHRI PAWAN KUMAR BANSAL: That is none of my concern as to whose follower you have been. But by your acts, I did come to presume that. perhaps, Hitler is your symbol.

SHRI RAM JETHMALANI: If Jayaprakash Narayan was Hitler, then I am also Hitler.

SHRI PAWAN KUMAR BANSAL: Madam, the unity and integrity of the country is the anthem of our life. It is our literature, our poetry and our philosophy. It is the concern for the country which keeps the Congress going. It is the concern for the country's welfare which makes us aspire. The unity

[Shri Pawan Kumar Bansal]

and integrity of the country is our legacy to the future. That, unfortunately, some of the hon. Members on the other side fail to appreciate. Unfortunately, Madam, what we find today is a systematic propaganda of spreading some sort of disaffection against the Government. The means are devious and many. Madam, to say that a person owes true faith and allegiance to the country is one thing, but to try and see that a duly elected Government is overthrown with the connivance of forces outside means total destruction of the system that the country has worked for itself. And, Madam, there are examples in the history of the world where there had been people from within the country who had invited people from outside to overthrow the duly elected Governments in their own States, and as such they surrendered their suzerainty to their masters from overseas. We have got to see that a situation like that does not develop in our country. Now to say that the feelings of the Sikhs are not being respected, that action is not being taken against those who were involved in any anti-Sikh riots is again trying to create an impression outside that things are not all well in this country. I very briefly want to refer only to the fact—and they have not dared to challenge that statement—that in the case of over 2,000 people who, it was felt, were involved in the anti-Sikh riots, cases have been lodged against them, and some of them have even been convicted. Now, I am sure, none of us would want that the Government should interfere in the working of the Judiciary, and the Government should dictate to the courts that such and such Punishment and sentence has to be awarded to these people. That in our system is the work of the courts, and we do want to keep our hands off from the working of the courts.

Madam, I only wish we discuss every issue at length in our country, whether in Parliament or in any forum available to us outside. But if you were to go to any country where there may be a large populace of Indians and to tell them, praticularly when they are already misinformed about the events taking place in our country, if you were to tell them that people of their religion are being discrimnated in our country, what do you think would be the outcome of that? Would it not incite passions of those people, particularly when we know that help to the Khalistan cause is pouring in from many people settled abroad? Madam, because of the constraint of time, I do not want to dwell at length, but I do want to say that, maybe, our hon. Member, Mr. Jethmalani was out and did not know of the reaction to his statements abroad. But with all sense of humility and sincerity, I do want to say that his meeting the people that he did abroad, that the speeches which he has circulated to the press and as he says, to you also, Madam, did not create the impression...

THE DEPUTY CHAIRMAN: No, I have not received any speech of his.

SHRI PAWAN KUMAR BANSAL: ...which he says, he meant to create.

THE DEPUTY CHAIRMAN: I have not received any speeches from you.

SHRI RAM JETHMALANI: I sent you a letter.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Oh, that is only a letter.

SHRI RAM JETHMALANI: That letter contains the enclosures, Madam Deputy Chairman, that shows the scant courtesy you shows to my communications.

THE DEPUTY CHAIRMAN: No, Mr. Jethmalani, I am pained to tell you that I read your explanation, not the material attached to it. That is not my responsibility. (*Interruptions*).

My job is only to read your personal explanation and give my view. (*Interruptions*).

SHRI PAWAN KUMAR BANSAL: And, Madam, today when he speaks here he urges upon the Government to talk to those people who matter in Punjab. On the face of it, I find no fault in a statement like that. But, Madam, permit me to say, it is a very specious argument. The Government did talk to Sant Longowal and in pursuance of the accord between Sant Longowal and Prime Minister Rajiv Gandhi the Akali Government did come into power there. Does Mr. Jethmalani mean to suggest that the Barnala Government did not at that time represent the will of the people of Punjab? The Barnala Government, Madam, came to power after a very peaceful election that we had in the State in the wake of the Rajiv-Langowal accord and on our part the Centre extended the fullest support to the Government there. But, let us not forget that it was the complete weak-kneed policies of the Barnala Government that again threw Punjab in a State of utter turmoil and chaos. One of the very first acts of the Barnala Government was to release all those people against whom there were serious cases of loot, arson, murder etc. I could understand if those people had been motivated to join the national mainstream but what did we see. There was a spurt of violence and what followed thereafter is a gory tale of events which makes us shudder whenever we think of that.

Madam, an allegation was hurled against the Congress Government that it wishes to perpetuate its power in all the States. Referring back to Punjab I want to tell them that when the Barnala Government was dismissed, it was not for the sake of assuming power in that State. We did not at that time know as to what would be the forces against which we would be arraigned. All that we knew was that it was the Constitutional obligation of the Centre to ensure that the Government of a State runs according to the constitutional provisions, that terrorism does not play havoc with the State and in that matter it does not play havoc with the country. It has been rightly said by the other side also that Punjab problem is a national problem. That is exactly what we have been saying from time to time and to solve the problem in the national spirit, there have been invitataions not on one, but on various occasions, to the leaders of the opposition to come, sit around the table and discuss the matter and try to see as to what can be done. We did provide an opportunity when all party meetings were held in the State. Some of our hon. friends, senior leaders of the opposition, they did attend those meetings. They went from here, Delhi, in the morning, took the platform offered by the Congress, tried to spread disaffection in the minds of the people and returned in the evening. That was their contribution in solving the Punjab issue. The result was the situation aggravated.

SHRI VIRENRA VERMA: Who are those Members?

SHRI PAWAN KUMAR BANSAL: The leaders whom the opposition parties said were their leaders and would attend the meetings. And they did attend the meetings, and without exception, that was the stance adopted by those hon. Members. Thereafter, the Prime Minister formed a Cabinet Sub-Committee on Punjab. The Cabinet Sub-Committee, consisted of senior members from the Union Cabinet. They visited Punjab in an endeavour to meet the largest number of people, to have an inter-action with the cross-section of the society and to see as to what can be done to solve the Punjab issue. An open invitation, a passionate invitation was extended to all the leaders of the opposition also but unfortunately they chose to boycott that meeting. And now to say that the Prime Minister is not sincere about solving the Punjab problem, that the Governments wants to

[Shri Pawan Kumar Bansal]

ensure that this situation of uncertainity continues to prevail in Punjab so that Congress gets power, is beyond my comprehension.

The Congress, more than anybody else today, wants normalcy to return to the State of Punjab because as the ruling party at the Centre, it is in our interest that peace returns to the State. But it is the inherent contradiction in the stand of some of the opposition groups which does not let a situation like this to materialise. For instance, I would refer to the contradiction in the stand of the then Lok Dal and now Janata Dal on the issue of Abohar and Fazilka. Till the elections, they do not want to be specific as to what their stand is. They do not want to say whether they are prepared to give up their claim on Abohar and Fazilka for the sake of Punjab to see that normalcy returns to Punjab. The Akali Dal, on the other side, do not want to be specific on the issue of SYL canal. They would not say till the elections that water may go to Haryana. That is the predicament in which we find ourselves today. And our friends on the other side say that it is for the Congress to go to each one of them and to impress upon them the urgency of solving the Punjab issue. It is very easy to say here that talks should be held with those who matter in Punjab, but what should matter in Punjab is the political process, the political parties, and not a few terrorists who draw suport—with all responsibility and humility I say—from our accusations against each other. It is this situation of uncertainity to which our friends on the other side have had more to contribute, which has resulted in the situation that plays havoc with the Sate today. I do hope, as we have been expressing such hopes in the past, that we would at least now feel that a time has come when in the national interest we stop hurling counter-allegations against each other, seize the opportunity of sitting together and trying to sort out the issues. The Government is ever prepared to do it. Being the largest party in the country, the largest party in any democracy in the world, the Congress realises its responsibilities that this unpalatable decision had to be taken to impose President's rule in our State. Coming from Punjab, I—and of course all the hon. Members here—would with that the matters relating to any State are better referred to the State legislature there and discussed in the proper forum which is the State legislature. It is only an unusual situation that calls upon us to discuss these issues. But it did pain me when in his anxiety to blame the Government on every score. Shri Ram Jethmalani chose to oppose even this Bill. This Bill, shorn of anything else, Madam, is an Appropriation Bill. In other words, it only seeks to accord approval to, put the seal of Parliament on, the various expenditure to be incurred by the State of Punjab during the current year. I do not want to draw any adverse inferences from an opposition even to this Bill, but I wish there were no opposition to it.

Madam, I would be unfair if, on this occasion, I do not express my gratitude to Mr. Matto who dwell at length on the various problems facing our state and made a forceful plea for giving more financial assistance to our State. Last year, ferocious floods inundated large parts of our State. Roads and houses submerged and crumbled in eight-feet-deep water. The water did recede but left behind in its trail a telling a tale of misery and devastation. The Government did provide some immediate relief but all that was promised has still not been given to the State. I do want to take this opportunity to urge upon the Government to ensure that the promise made regarding rehabilitation of the farmers who were hit by the floods is respected, is fulfilled. I say, so, particular because, once again, Punjab is threatened by floods this year. If my information is not inaccurate... (*Time-bell*) water has already entered over 70 villages in our State. Despite the havoc that the floods played in our State last year, we exceeded the target of foodgrains procuremnt for the Central food kitty this year. This is a record for Punjab despite the various odds that the State has had to face from time to time.

Since you have rung the bell, Madam, I will not take long but just refer, briefly,

to two or three points. Apart from the damage caused to the State's economy by floods, the industry in the State is in a severe state of crisis. There is extreme shortage of raw materials. On the top of it, what has come as a real hard blow is the steep increase in the tariff of electricity. May be, there has been no rise in the tariff for the last four or five years. But raising it to as high as 60 per cent would mean a burden unbearable by the industry. The base of industry in Punjab is not more than 11 per cent and steps such as this would only inflict a serious blow to the further development and progress of the industry. Further, the shortage of pig iron etc., threatens the closure of the foundry industry in the State meaning thereby the possible retrenchment of a large number of workers.

Finally, I would urge that there is need to have a second look at the price that we get for the agricultural produce. It is said that the prices are kept low because the electricity is subsidised for the farmers. This is a plea which may sound quite meaningful *prima facie*. But this has cost substantially to our State. The foodgrains are procured at a price which would otherwise not be remunerative and in the process it is the State as such which suffers as it bears the electricity bill and suffers enough, so much so that the scarce resources are utilised as subsidy and we are not left with anything to look after the various other matters which are of paramount importance to the State. The Centre should look into it and do justice to the State. Thank you, Madam.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Minister.

SHRI ANAND SHARMA (Himachal Pradesh): Before the Minister replies, may I seek your permission to ask some clarifications of Mr. Jethmalani? I was not present...

THE DEPUTY CHAIRMAN: I called your name, but you were not in the House.

SHRIMATI BIJOYA CHAKRAVARTY (Assam): Madam, I had taken permission from the Chair.

SHRI RAM JETHMALANI: I have no objection if he wants to ask any questions.

SHRI VIRENDRA VERMA: Then he should be given a chance to reply also.

THE DEPUTY CHAIRMAN: I called your name and you were not in the House. So you have lost your chance. Please sit down.

SHRIMATI BIJOYA CHAKRAVARTY: Madam, I want to say that I duly informed the Chair that I shall be coming back after five to fifteen minutes.

THE DEPUTY CHAIRMAN: At what time?

SHRIMATI BIJOYA CHAKRAVARTY: I said that I would come back after five to fifteen minutes.

THE DEPUTY CHAIRMAN: You were not here when I called your name in the House. And Mr. Subramanian Swamy also was not here.

SHRIMATI BIJOYA CHAKRAVARTY: I pray to you, kondly give me permission. I shall not take much of your time.

THE DEPUTY CHAIRMAN: I called your name much later—at about 5.30 p.m. He is also asking some questions. Do you want to ask some questions?

SHRI ANAND SHARMA: A few clarifications. I overheard Mr. Jethmalani to say that he had sent a letter along with some annexures.

SHRI SUKOMAL SEN (West Bengal): At this late hour, should we go into a question-answer session? Is it desirable? Why do you allow this?

THE DEPUTY CHAIRMAN: We have to finish it today. What do you want to ask, Mr. Sharma?

SHRI SUKOMAL SEN: Madam, enough is enough.

SHRI ANAND SHARMA: Why are you reacting? I am asking the permission of the Chair to ask Mr. Jethmalani some questions.

SHRI RAM JETHMALANI: Yes, if you allow, Madam. I have no objection. I will welcome it.

SHRI VIRENDRA VERMA: Then he will have to reply to those questions.

THE DEPUTY CHAIRMAN: If necessary.

SHRI ANAND SHARMA: By this time, I would have even asked my questions.

SHRI RAM JETHMALANI: As a lawyer, I have always maintained that a witness who refuses to answer must be considered derogative.

SHRI ANAND SHARMA: He has said that he never made any statement which could be termed either as indirect incitement or indictment of his country. I would like to draw his attention towards the transcript of an interview which he had given in November, 1987.

SHRIMATI BIJOYA CHAKRAVARTY: We are not discussing that in this House. .... I am not going to take orders from you. I am asking the Chair.

SHRI ANAND SHARMA: Madam, in that interview given to the Third World Broadcasting Corporation—I am sure the hon. Member knows about it—when Zia-ul-Haq was the President of Pakistan—that this was partly funded by the ISI of Pakistan, in that interview leading questions were asked about India and not even a word is there throughout that interview that shows any concern about Pakistan's nuclear weapon programme or its hostile intentions towards India. To a particular question, I would like to draw your attention and if you do not mind I will just read it out.

SHRI RAM JETHMALANI: Let me reply. I know what you are asking.

SHRI GHULAM RASOOL MATTO: But let others also know what the question is.

SHRI ANAND SHARMA: The question is:

> How do you account for India's hostile posture towards Pakistan?

And the answer is:

> It is difficult to say about India's motivation. However sensible people want relations between India and Pakistan to improve. Creating mass hysteria against Pakistan is reflective of Rajiv Gandhi's domestic insecurity. Weak rulers have always resorted to creating mass hysteria.

There is not a word about what Pakistan has been doing under Zia-ul-Haq. I would like to draw his attention towards that.

Secondly, I would also like to draw Mr. Jethmalanis attention, because it is in the same programme, to an astrologer named Nazir Karam Ahmed.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Sharma, what are you talking about. Is it an interview. We are discussing Punjab.

SHRI RAM JETHMALANI: I thought you were asking some question, I know.

SHRI ANAND SHARMA: All right, I will come to that. Madam, in the same programme there was a Pakistani astrologer...

SHRI RAM JETHMALANI: You are talking of something two years ago...

THE DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Anand Sharma, it doesn't come under Punjab... (*Interruptions*)...

SHRI ANAND SHARMA: You may not bring it on record.

THE DEPUTY CHAIRMAN: If you don't want it on record, you write a

letter to him and he will reply to that. We go back to the Appropriation Bill.

SHRI ANAND SHARMA: But in the same programme, a Pakistani astrologer has made predictions about the next assassination attempt on Rajiv Gandhi... (*Interruptions*)...

SHRI RAM JETHMALANI: You are asking something of two years ago.

SHRI ANAND SHARMA: Yes, that is what I am coming to... (*Interruptions*)... All right, I will give it to you... (*Interruptions*)...

SHRI RAM JETHMALANI: Write to me.

SHRI ANAND SHARMA: The honourable Member has said that I should refer to his recent speech.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Now you don't refer to any speeches. Write a letter to him and let Mr. Jethmalani reply to you.

SHRI ANAND SHARMA: Why can't we use this as a forum, Madam?

THE DEPUTY CHAIRMAN: This is a Punjab matter.

SHRI ANAND SHARMA: This is also very much about Punjab.

THE DEPUTY CHAIRMAN: It is very late in the day.

SHRI ANAND SHARMA: What is very late, Madam? I have the transcript of his speech at the Southall Gurdwara published in *Des-Pardes* which, in fact... (*Interruptions*)...

SHRI RAM JETHMALANI: I do want to refer to what Mr. Chidambaram did this morning; I want that long, long reply to be questioned.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Give a long written reply to him. You send it to him in writing and he will reply to you. About that he has given you an assurance... (*Interruptions*)...

SHRI ANAND SHARMA: He said that he has not made any provocative references, and I am in possession of the transcript of that, which I term as indirect incitement and as an indictment of the country... (*Interruptions*)...

THE DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Anand Sharma, as I requested you, you might write a letter to Mr. Jethmalani. Whatever inquiries you want to make, you ask in that and he assured you that he will reply. Okay? ... (*Interruptions*)...

SHRI ANAND SHARMA: I am asking here so that the House benefits.

THE DEPUTY CHAIRMAN: This is not the forum. Mrs. Bijoya Chakravarty... (*Interruptions*)... Please sit down; please take your seat. Mrs. Chakravarty, I have called you already. So, I can give you only two minutes now—and don't speak about Assam. You are speaking on Punjab, I want to remaind you.

SHRIMATI BIJOYA CHAKRAVARTY: Thank you, Madam. Madam, probably I have got a record of not speaking irrelevant things.

SHRI RAM JETHMALANI: Madam, can I say one word?... (*Interruptions*)... Kindly hear me. I want to pay a compliment to the last speaker for a brilliant and constructive speech. I wish speeches of this kind became more and more frequent in this House.

SHRIMATI BIJOYA CHAKRAVARTY: Madam, honourable Members belonging to my side, the Opposition, have expressed our anxiety at the present serious situation and the state of affairs prevailing in the State of Punjab. It is due to the wrong policies followed by the Central Government in Punjab. That is why a sense of void and a sense of insecurity prevail in Punjab.

Madam, it is very painful that we have to pass here the Punjab Budget and Appropriation Bills year after year. Even after three years of Presidential rule, we have seen that no

[Shrimati Bijoya Chakravarty]

peace or normalcy prevails in Punjab. Madam, I want to ask one question: What is the Government's policy about Punjab? Whenever this question is asked, the Government comes with one explanation, that there are terrorist activities in Punjab. What is it? The Government's explanation is that terrorists have brought sophisticated arms across the border, from a neighbouring country. So, I want to ask the question: What are the security forces doing there? The so-called terrorists, as the Government explains, are, simply, unorganized people. If the smuggling of arms across the border cannot be stopped...

THE DEPUTY CHAIRMAN: I thought you were very concerned about Punjab. You can't take ten minutes.

SHRIMATI BIJOYA CHAKRAVARTY: Madam, I think you are interrupting me... (*Interruptions*)... Sorry, Madam.

THE DEPUTY CHAIRMAN: I was only telling Mr. Jethmalani that we are all concerned with Punjab and he can spare 10-20 mintues for it, so let us not be in a hurry. But, you please be in a hurry.

SHRIMATI BIJOYA CHAKRAVARTY: Madam, you have taken another 15 seconds from me. So, while talking about the policy of the Government on Punjab, I would say that this policy of permutation and combination will not help. This policy is not being applied to Punjab alone, but we have seen that such a policy is applied to other States of the country also. Other States are also brought under such a situation. I would say that adoption of such an approach is a threat to the nation as a whole.

I would like to know the condition of the Jodhpur detenus. Earlier they were released and were again arrested. I would like to know the exact number of Jodhpur detenus who were released and then arrested. I would also like to know the policy of the Government in regard to the culprits of 1984 riots who created an abnormal situation in Delhi. Why are these people not punished? Why is the Government following a partisan policy in this regard? This will not help the country in any way.

Since there is no solution of all these problems, there is no normal situation in Punjab and that is why there is no democratic condition all over the State. Probably that is the reason why the Government is not holding elections there. In order to create a normal situation in Punjab, the Government should hold discussion with the Opposition people so that a solution is hammered out and normal conditions brought back in Punjab. Punjab is an advanced province of the country. It is advanced in agriculture and in industry. In the field of sports also Punjab people are taking a leading role. Such people cannot be allowed to rot in such a way. Moreover, we have seen that police excesses are there in Punjab. Police, military and para-military rule cannot bring back proper situation in Punjab. We have seen that innocent people in Punjab are harassed. I come from the north-eastern region of the country. I know under such a condition what will be the position of the innocent people. I feel it very much because I am a victim of it. In regard to the excesses committed by the policemen, even the policemen themselves have admitted that whatever action they have taken is not always correct. We have seen that people of Punjab have to live under constant threat from two terrors—one from the police authorities and the other from the terrorists. Under such a situation normally people cannot live in a proper way as any other human beings. So, what I want is that the Government should try to hammer out a policy. Instead of placing the Appropriation Bills in the House, they should try to hold elections in Punjab and the Government should try to behave with the Punjab people keeping in view their dignity.

THE DEPUTY CHAIRMAN: I am reminding you next time you give your name, please be in the House on time. I allowed you to speak this time. Next time we may not be able to help you. O.K? Thank you.

SHRI V. NARAYANASAMY: It is a special consideration for a woman.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Thank you.

SHRI B. K. GADHVI: I am thankful to all the 17 hon. Members who have participated in the discussion, including those who were interruptional in between.

Although on the Bill as such few members have spoken, yet, since in this Bill we are also demanding amounts to be spent on the police and on other things, to speak about the political situation obtaining in Punjab was also relevant. Therefore, most of the speeches were political.

I understand that during the discussion some hot exchanges had taken place between one hon. Member and another and the hon. Member, Mr. Ram Jethmalani while making his speech tried to clarify his position and stand here in the country as well as abroad. I am at pains to understand his statement. It should be a matter of anguish for all of us. Although claiming to be patriotic in very high sounding words about patriotism he had the audacity to invite the Amnesty International to visit Punjab. It reminds me of a quotation by Shakespeare in one of his dramas: "All the perfumes of Arabia will not sweeten this little hand." Despite all the sense of patriotism and high sounding words, whether loyalty to the country has migrated along with his physique to a country, or not is the question before me. You are talking as if a genocide is going on in Punjab. Is it your way of expressing that Punjab problem should be solved or is it adding fuel to the fire? I am surprised at his speech and that too coming from a responsible Member of this House and a senior counsel. Madam, latently or patently or impliedly the words tend to suggest to others that there is some thing going on which is very cruel, which is not in accordance with the true democratic concept of our country.

श्री बो० सत्यनारायण रेड्डी : इलेक्शन कराइये, इलेक्शन कराइये । इलेक्शन क्यों नहीं करा रहे हैं ?

SHRI B. K. GADHVI: I am coming to that. Kindly don't interrupt me. I have not spoken. Madam, the Punjab problem is a very complex problem. It has to be handled with care, delicacy and caution. It is not just a problem on which we can bake our political cake. You are doing like that.

SHRI KAMAL MORARKA: You are doing.

SHRI B. K. GADHVI: We are not doing. You are trying to make a political cake out of it ... (*Interruptions*) ... Please have a little introspection.

Mr. Hanumanthappa Rao while speaking on the Bill has said that the implementation of Shri Rajiv Gandhi-Longowal accord is one of the major contributory factors in solving the Punjab problem. Look at your stance. In Haryana, Devi Lal after coming to the power said: "I don't believe in this accord." He refused to accept it. The Akali Dal party doesn't come and sit with cooperation. They don't try to implement the accord... (*Interruptions*) ... I am not telling about the persons. I am telling about the stance of all the Opposition parties. Of course, the CPM and CPI parties are contributing for restoration of peace and normalcy in Punjab. But so far as political solution is concerned, have they got the audacity and courage to say to their counterparts with whom they are speaking with one voice and sitting on a common bench, "Look here, if you want to solve the Punjab problem, let us simply implement Shri Rajiv Gandhi-Longowal accord; otherwise we will not cooperate with you in these political gimmicks... (*Interruptions*) ... I am not depending upon anybody. The Government is not depending upon anybody. But the Government is certainly telling that those parties which are claiming to be national parties (*Interruptions*)

THE DEPUTY CHAIRMAN: I would not like any interruption. Let the Minister reply.

SHRI B. K. GADHVI: Let us come together and find a solution to the Pun-

[Shri B. K. Gadhvi]

jab problem on a national platform. But there is a difference between your deeds and your speeches ... (*Interruptions*)...

SHRI MOTURU HANUMANTHA RAO: When I said that we want Rajiv-Longowal accord to be implemented, it means whichever...

SHRI B. K. GADHVI: I am telling you the same thing.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Hanumantha Rao, please sit down. You had your say. Don't interrupt. Let us finish.

SHRI B. K. GADHVI: Let us not forget the fact which are the contributory factors scuttling down the Rajiv-Longowal accord. The Government of India, Shri Rajiv Gandhi and the Congress party are committed to the implementation of the Rajiv-Longowal accord but you are scuttling it. You are sabotaging it from within ...(*Interruptions*)... Today, you are forging a unity. But so far as Punjab problem is concerned, its solution is concerned, its medicine is concerned, you are trying to poison that very medicine and that is the preversity of the mind, perversity of the purpose and perversity of the object on the part of the Opposition parties. (*Interruptions*)...

SHRI SUKOMAL SEN: Who prevented you from implementing the Accord?

SHRI B. K. GADHVI: We have got a federal structure. In Haryana, it is Devi Lal's Government which is your ally... (*Interruptions*)... In Haryana, when it was our Government, we had approved the Accord in the Haryana Assembly... (*Interruptions*)... But when Mr. Devi Lal's Government came into power, they refuted it they repudiated it...(*Interruptions*)... I am not yielding to anybody. I am only stating the plain facts and that is why, I say, don't try to blow hot and cold. On the one hand, the Akalis are your ally. The Janata Dal is your ally. Mr. N. T. Rama Rao, the chairman of the National Front the CPI, the CPI(M), all are forging unity together...(*Interruptions*)...

THE DEPUTY CHAIRMAN: I am very sorry, Mr. Moturu Hanumantha Rao, you are a very senior Member. The Minister did not interrupt you for one minute. You had your say. Now, let him reply...(*Interruptions*)...No, I will not allow these interruptions. He has a right to speak. You please sit down. You accused him. He accuses you. It is okay.

SHRI B. K. GADHVI: That is why, Madam, I say that whatever you may paint of the palimpsest, the original design of the palimpsest would ultimately reveal and it stands exposed today. This is what I say. In Jethmalani's speech also, the original design of the palimpsest stands exposed by his invitation of the Amnesty International. That shows there is an exposure. I understand that nobody can dare to speak againt Indian nationalism, Indian patriotism in this country. But when people go abroad, they forget everything and it is the tacit and implied way of saying, inciting the people and adding fuel to the fire. These are the diabolical ways which are not unknown to us...(*Interruptions*)...Please don't compare Gandhiji. We are not born yesterday not to understand your diabolical ways and designs. But, Madam, as I stated, very few people spoke on this Appropriation Bill today. I would repeat that the Government of India and the Congress party is committed to the implementation of the Rajiv Gandhi-Longowal Accord. We are committed to preserve the sovereignty, integrity and unity of this country. You do not know history. Sikkim was a little away from India sometime back. It is because of the efforts of the Congress(I) that it has come to the fold of India...(*Interruptions*)...

SHRI ANAND SHARMA: Please educate Mr. Kamal Morarka...(*Interruption*)...

SHRI RAM JETHMALANI: Shall I remind what you have done to the country... (*Interruptions*)...

SHRI B. K. GADHVI: Mr. Jethmalani, I can very well understand your anguish about the partition and you being a victim of partition. Partition was engineered

by the foreign powers but under the Congress rule... (*Interruptions*)... Kindly listen to me. I have not interrupted you.

SHRI KAMAL MORARKA: We do not want to learn history again, Madam, and that too about partition from Mr. Gadhvi...(*Interruptions*)...I know that one day you will repudiate Gandhiji also if it suits your purpose (*Interruptions*). I can understand Mr. Ram Jethmalani's anguish that he was a victim of the partition. (*Interruptions*). You should not forget our dedication and our concern for upholding the unity and integrity of this country. One limb of the country which was far away like Sikkim was brought to the main nation under the Congress rule and-aegis (*Interruptions*)

SHRI RAM JETHMALANI: Do you know that Gandhiji said "I will not allow partition except over my dead body" and the Congress agreed?

SHRI ANAND SHARMA: Please make the record straight.

SHRI B. K. GADHVI: I am placing the record straight. Even if today you are not going to blame the Britishers for partitioning the country, perhaps, your understanding of history is very very poor. (*Interruptions*). Today, in Punjab, the situation is such that we are not happy about it. The Government is not happy about the Punjab situation. We do not say that violence has been totally abolished from Punjab. But we do say that people have isolated the people who are indulging in extremism and terrorism. We are gathering direct information and people have started giving us information. You are all talking about the popular government to be established in Punjab. We know and we are for it. It is not that we are not for it. It is not a happy occasion for us to come before the Parliament for passing the budget of a State Assembly for which the legitimate forum is the State Assembly. (*Interruptions*) We wanted that people should have their own elected representatives. Even though the conditions which were obtaining then were turmoil, elections were granted. But unfortunately at that time, the ruling party, some of the members and some of the office-bearers in the ruling party, became the asylums, their houses and other things became the asylums, for terrorism. You do not know. The entire world knows it. You do not see it for yourselves. And today, I can give you figures. Though, of course, in desperation the killings have gone up, at the same time, the killings of extremists and terrorists have gone up, arrests have gone up seizures of arms have gone up. Everything has gone up. But despite that, we noted progress. You are telling that this terrorism and other things are developing because of unemployment.

SHRI SUKOMAL SEN: Who says so?

SHRI B. K. GADHVI: Some of the Members said. You did not listen.

SHRI SUKOMAL SEN: From your side?

SHRI B. K. GADHVI: From your side.

SHRI SUKOMAL SEN: Your policies have led to unemployment leading to unlawful activities.

SHRI B. K. GADHVI: You have not participated. You have not spoken. Why are you unnecessarily getting up? Some of the Members have said that unemployment also is one of the contributory factors for this terrorism. We know that not only in Punjab but everywhere in the country employment must get priority.

SHRI ANAND SHARMA: If you go by their...

SHRI B. K. GADHVI: Mr. Sharma, please, would you bear with me for a moment? We know that unemployment problem has to be solved not only in Punjab but all over the country. We, therefore, brought the Jawahar Rozgar Yojana which you are opposing today so that people do not get employment. we know that 20 years back...(*Interruptions*).

SHRI SUKOMAL SEN: Madam, please interfere.

SHRI B. K. GADHVI: Madam, would you kindly stop them?

THE DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Sukomal Sen, your party had its time. Everybody got his turn to speak. Let the Minister reply now. (*Interruptions*).

SHRI B. K. GADHVI: Before 20 years, Madam, we had the nationalisation of banks. We wanted that poor people should have access to banks and in the development process, banks' money should be used. A grand alliance was formed at that time. Today we wanted that 'garibi-bekari hatao' programme he launched. And again a grand alliance has been formed for opposing it. So the pattern and design is constant. Twenty years ago it was the same stand of the grand alliance. At that time Indiraji said garibi hatao. This time Rajiv says bekari hatao. Again the grand alliance is there to oppose it. They are talking of democracy, not we. Their words are hollow. We want to give power to the people and they oppose it. (*Interruptions*) This is what I was saying briefly, how hollow their political stance is, and their service to democracy, their service to parliamentary democracy, their service to parliamentary institutions, stands exposed before the entire world.

On this Bill I would say perhaps Members are not properly informed. Some Members, particularly Mr. Jethmalani, wanted to know about the post-assassination culprits of Delhi riots. Even the last speaker, the lady Member, also wanted figures. I would say we are wedded to the judicial system in this country. All told, 225 cases involving 2329 accused were registered. Out of these 11 cases have been disposed of by the courts convicting 80 accused; 66 cases...

SHRI KAMAL MORARKA: Shame.

SHRI B. K. GADHVI: If you want to say shame to courts. I cannot understand it. In 66 cases 346 accused have been acquitted. In 7 cases 58 accused have been discharged and in 14 cases charges against 55 have been withdrawn. And today 127 cases involving 1817 accused are pending with the courts...

SHRI KAMAL MORARKA: If this is not shame, what else is?

SHRI B. K. GADHVI: Mr. Morarka, I know that you will be touchy about the real facts. But I think beside you there is a very great brilliant advocate who has his ingenious way of prolonging the trials. You ask him and he will tell you. He is an expert...

SHRI RAM JETHMALANI: Why? Do you also want me to defend you?

SHRI V. NARAYANASAMY: No, that day will not come.

SHRI B. K. GADHVI: So far as terrorism is concerned, these people wanted to know about the performance of this Government after imposition of President's rule President's rule was imposed on 11th May 1987. The popular Government came into power in October 1985 and lasted up to April 1987. So far as development in Punjab is concerned, I give you the figures. Between October 1985 and April 1987 during the Akali Dal, number of small scale units established: 17435 with a fixed investment of Rs. 124.23 crores. Employment generated for 52000 people. After imposition of President's rule number of small scale units established 22239; investment Rs. 188.75 crores. And employment generated for 64000 people. During the popular rule, as you may say, in large scale sector 26; during Governor's rule 28. So far as project construction is concerned, during the popular rule, under 30 and commissioned 20. Now, after 1987, the number under construction was 39 and the number commissioned is 32. This is the development in the industrial sector. I would like to tell you that if you want the figures, I can furnish you all the figures and I can positively tell you that we have been able to achieve conspicuous results. So far as the development of Punjab on the industrial front, on the agricultural front, on the agro-based industries front, on the small-scale industries front and on other fronts is concerned, there is great progress. On the 20-Point Programme also, I wish to tell you that in many areas we have exceeded the target, more than 120 per cent... (*Interruptions*).... If you want, I can certainly give you the figures and.

for your own benefit, I can continue now and I can enrich your knowledge... (*Interruptions*)...

SHRI KAMAL MORARKA: Madam, there is no quorum now.

SHRI B. K. GADHVI: If there is no quorum, it is for the Chair to decide.

I know that whenever we talk of the development of any region and when we give them the figures, at least those people who are coming from West Bengal, because their performance is very dismal, would not like to listen... (*Interruptions*)... and I know that they become very chary and touchy about it... (*Interruptions*)... But, so far as Punjab is concerned, I would say that in the area of combating and containing terrorism, we should place the bravery of the police with appreciation on record. Many of the police officers and police jawans have laid down their lives. Of course, there were certain grievances of the people that in some of the areas there were excesses. But a system has been established for monitoring and for the redressal of the grievances of the people and that is working well. So far as winning their hearts is concerned, it is true that every citizen's heart must be won by any Government worth its name. But, at the same time, it has been declared time and again by the Government, by the Prime Minister, by the Home Minister and by everybody that we cannot talk with anybody who is not prepared to talk within the framework of the Constitution, who is not prepared to talk after eschewing violence. If somebody does not give up his gun, if somebody does not talk within the framework of the Constitution, when you say that the Constitution is our Dharma Granth, how can we go about it? We are prepared. A Committee was set up and they went to Chandigarh and who co-operated and who did not co-operate, you know better. Whenever it comes, we know that so far as some of the Members are concerned, some of the leaders of the various political parties are concerned, they have got their own ends in view. But, so far as the development of Punjab is concerned, I have to congratulate the people and the farmers of Punjab on behalf of the Government, because, despite there being this situation, they have contributed to the food pool of the country. Despite this situation there, production on the agricultural front is on and it has gone up, establishment of industrial units in on in the tiny, medium, small and large sectors, investment is up in poverty-alleviation programmes and there is progress in land reforms. Punjab has achieved commendable success in land reforms. I have got all the figures. But I do not want to take much of the time of the House in giving the figures. But I wish to say only one thing now. So far as the Jodhpur detenus are concerned-he raised the point-they are all released. But some of them are under arrest, not because of anything to do with that detention, but because they were involved in accusations and cases of a very serious nature. They had no relation with the case of Jodhpur detention. Some people suggest that we should give amnest to everybody, we should forgive everybody. But that process also has to be scrutinised. You cannot have a general rule. The Prime Minister has given the package. In some of the areas all the restrictions on foreigners going into Punjab and everything else has been withdrawn. The border is also being sealed. We are now confident of the new Government that has come across the border. (*Interruptions*) Don't worry. You have got a little brain for big things to understand. So it is not that the Punjab Government is not keen. The menace and the problem of terrorism and extremism in many, many countries was there and it could not be contained within a very small span of time. It requires cooperation of all people, and I am happy to inform you that the cooperation of the people is forthcoming. Now the people are isolating terrorists and, therefore, they are desperately trying... (*Interruptions*). Any mad man would certainly try to create an atmosphere in which people would again be cowed down. But it is not going to come through.

With these words, I conclude, and I commend the Bill to the House.

THE DEPUTY CHAIRMAN: The question is:

"That the Bill to authorise payment and appropriation of certain sums from and out of the Consolidated Fund of the State of Punjab for the services of the financial year 1989-90, as passed by Lok Sabha, be taken into consideration"

*The motion was adopted.*

THE DEPUTY CHAIRMAN: We shall now take up clause-by-clause consideration of the Bill.

*Clauses 2 and 3 and the Schedule were added to the Bill*

*Clause 1, the Enacting Formula and the Title were added to the Bill*

SHRI B. K. GADHVI: I move:

"That the Bill be returned."

SHRI GHULAM RASOOL MATTO: The hon. Minister has also replied to the political side.

THE DEPUTY CHAIRMAN: The question is:

"That the Bill be returned."

*The motion was adopted.*

THE DEPUTY CHAIRMAN: The House now stands adjourned till tomorrow, 11 o'clock.

The House then adjourned at forty-three minutes past six of the clock till eleven of the clock on Wednesday, the 2nd August, 1989.